

## अध्याय 2

# आराधना की सेवा में

जैसे हम 1 तीमुथियुस के दूसरे अध्याय का विश्लेषण आरंभ करते हैं, तो हमें यह निर्धारित करना होगा कि इस अध्याय का विन्यास सार्वजनिक आराधना है। इस अध्ययन के लिए कई टीकाओं की सहायता ली गई है - धर्मविज्ञान के एक परिक्षेत्र से दूसरे परिक्षेत्र तक ऐसे स्रोतों की भी सहायता ली गई है जो लगभग सभी विषय वस्तुओं को आच्छादित करता है। उनकी विषमता के बावजूद, उनमें से हरेक, अध्याय 2 को एक सर्वमान्य शीर्षक: “सार्वजनिक आराधना” देते हैं।

इस निष्कर्ष के लिए विभिन्न लेखकों द्वारा दिए गए तर्कों का सारांश यह है:

हाथ उठाकर प्रार्थना करना सार्वजनिक प्रार्थना की आम पहचान थी।

पौलुस का शासकों के लिए प्रार्थना करने का निर्देश सार्वजनिक प्रार्थना में

मूर्तिपूजक शासकों के लिए प्रार्थना यहूदी परंपरा का विरोधाभास था।

यदि यह अनुच्छेद सार्वजनिक प्रार्थना के बारे में नहीं है तो यह एक स्त्री को कहीं भी, यहाँ तक कि उसके अपने घर में प्रार्थना करने से भी मना करती है।

आयतें 11 और 12 पहला कुरिंथियों 14:34, 35 के समानांतर है, जो निश्चित रूप से सार्वजनिक आराधना के विषय में बताता है (देखें 1 कुरिं. 14:23)।

यह मान लेना कि इस अध्याय का शीर्षक सार्वजनिक आराधना है, सभी विवादों का समाधान नहीं है, लेकिन यह हमको कम से कम वार्तालाप प्रारंभ करने का मंच प्रदान करता है।

सार्वजनिक आराधना में उपदेश देना सदैव आवश्यक समझा जाता है। व्यक्तिगत आराधना की भी अपनी महत्त्वता है, लेकिन सार्वजनिक आराधना कलीसिया को बांध कर रखती है। इससे बढ़कर, सार्वजनिक आराधना कलीसिया की पहचान है जिसे जगत देख सकता है। इस विषय पर निर्देश, इफिसुस की कलीसिया की नितांत आवश्यकता थी।

अध्याय 2 को लगभग दो बराबर भागों में बांटा जा सकता है (2:1-7, 8-15), प्रत्येक भाग यूनानी शब्द οὐν (ऊन) से चिह्नित किया गया है जिसका अनुवाद “अब” (2:1) और “सो [इसलिए]” (2:8) किया गया है। पौलुस “सभी लोगों” के लिए प्रार्थना करने के प्रबोधन से प्रारंभ करता है (2:1-7)। तब वह

आराधना में लोगों की जिम्मेदारियों (2:8) और आराधना के दौरान स्त्रियों के व्यवहार का संबोधन करता है (2:9-15)।

## “सब लोगों के लिए प्रार्थना की जाए” (2:1-7)

1 अब मैं सबसे पहले यह आग्रह करता हूँ कि विनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिए किए जाएँ। 2 राजाओं और सब ऊँचे पदवालों के निमित्त इसलिए कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएँ। 3 यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता और भाता भी है, 4 जो यह चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो, और वे सत्य को भली भाँति पहचान लें। 5 क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है। 6 जिसने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया, और उसकी गवाही ठीक समय पर दी गई। 7 मैं सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता, कि मैं इसी उद्देश्य से प्रचारक और प्रेरित और अन्यजातियों के लिए विश्वास और सत्य का उपदेशक ठहराया गया।

इस अनुच्छेद में, पौलुस ने प्रार्थना को सार्वजनिक आराधना के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में रेखांकित किया है। इन आयतों के केंद्र में, पौलुस ने नये नियम की सबसे सामर्थशाली अनुच्छेदों में से एक अनुच्छेद पापियों के लिए परमेश्वर के उद्देश्य और प्रबंधन सम्मिलित किया है। इन आयतों में जो विषय पाया जाता है वह सुसमाचार की सार्वभौमिकता है। मुख्य शब्द “सब” है (2:1, 4, 6)।

**आयत 1.** अध्याय 1 में पौलुस ने तीमुथियुस को झूठे उपदेशकों का सामना करने का सामान्य निर्देश दिया। अध्याय 2 में प्रेरित ने उसे विशिष्ट निर्देश दिया। तीमुथियुस को जो कुछ करना है, उस सूची में सबसे ऊपर प्रार्थना सूचीबद्ध किया गया है: **अब मैं सबसे पहले यह आग्रह करता हूँ कि विनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिए किए जाएँ।** “सबसे पहले” वाक्यांश हमें यह बताता है कि “यह अति महत्वपूर्ण है” या “यह पहली बात है जिसे मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ।” पूरे नये नियम में प्रार्थना की महत्वता के बारे में बात की गई है या फिर प्रार्थना करने के लिए कहा गया है। इससे बढ़कर इसके बारे में और कुछ नहीं कहा जा सकता है कि “निरंतर प्रार्थना में लगे रहो” (1 थिस्स. 5:17); “इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने अपने पापों को मान लो; और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिस से चंगे हो जाओ; धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है” (याकूब 5:16)। किसी ने उचित ही कहा है, “जब आप उत्साह पर निर्भर रहते हैं, तो आप वही प्राप्त करते हैं जो उत्साह कर सकता है। जब आप संस्था पर निर्भर रहते हैं, तो वही प्राप्त करते हैं जो संस्था कर सकती है। परंतु जब आप प्रार्थना पर निर्भर होते हैं, तो आप वही

प्राप्त करते हैं जो परमेश्वर कर सकता है।”

जब पौलुस ने कहा, “अब मैं सबसे पहले यह आग्रह करता हूँ . . . प्रार्थना . . . किए जाएँ,” तो वह केवल सुझाव नहीं दे रहा था। यूनानी शब्द *παρακαλέω* (*पाराकालेओ*) जिसका अनुवाद “आग्रह करता हूँ” किया गया है, का तात्पर्य जोर देकर आग्रह करना है (देखें 1:3)। इसका यथा अर्थ “किसी का पक्ष ले लेना” है।<sup>1</sup> यहाँ एक ऐसा चित्र प्रतिबिंब होता है जिसमें बूढ़ा पौलुस पिता के समान तीमुथियुस की ओर होकर उसके कंधे पर हाथ रखकर बातें करता है।

इस पत्री में, पौलुस ने विभिन्न किस्म के शब्दों का प्रयोग कर उसके निर्देशों की गम्भीरता के बारे में बताया है: “आग्रह करता हूँ” (1:3; 2:1), “चाहता हूँ” (2:8, 9; 5:14), “आज्ञा” (1:18), और “चित्तौनी” (5:21; 6:13)। सामान्य बोलचाल में, इनमें से कुछ शब्द दूसरे शब्दों की तुलना में अधिक प्रभाव डालते हैं; लेकिन चूँकि ये शब्द पौलुस के द्वारा प्रयोग किया गया है तो ये प्रेरित के अधिकार से प्रयोग होने के कारण अधिक महत्वपूर्ण बन जाता है। ये सभी एक चेतावनी के साथ प्रयोग किए गए हैं: “इन निर्देशों का तू इनकार कर और तू खतरे में होगा!”

जैसे पौलुस ने यह आग्रह किया कि परमेश्वर से प्रार्थना की जाए तो उसने इससे संबंधित बातों के लिए चार अलग-अलग शब्दों का प्रयोग किया है: “निवेदन,” “प्रार्थना,” “विनती,” और “धन्यवाद” (फिलि. 4:6 से तुलना करें)। यद्यपि ये चारों शब्दों के अर्थ एक दूसरे के पूरक हैं, लेकिन इनमें से हर एक शब्द हमको यह समझने में सहायता करता है कि पौलुस के मन में क्या था। “निवेदन” यूनानी शब्द *ὑπόσπου* (*डेसिस*) का अनुवाद है जिसका अर्थ “अत्यावश्यक निवेदन” है।<sup>2</sup> इस शब्द में आवश्यकता की झलक दिखाई देती है। “प्रार्थना” यूनानी शब्द *προσευχή* (*प्रोसुखे*) का अनुवाद है, जो नये नियम में “प्रार्थना”<sup>3</sup> के लिए प्रयोग किए गए सामान्य शब्द है, जिसका अर्थ “ईश्वर से निवेदन” है।<sup>4</sup> नये नियम में इस शब्द का अर्थ सदैव प्रार्थना से संबंधित है जो परमेश्वर को संबोधित करता है। इसमें *श्रद्धायुक्त भय* निहित है। “विनती” यूनानी शब्द *ἔντευξις* (*एन्टूक्सिस*) का अनुवाद है जो “उच्च अधिकारी के सम्मुख वैधानिक निवेदन है” - इस संदर्भ में यह परमेश्वर से संबंधित है। इस अध्याय में, यह “मध्यस्थता की प्रार्थना”<sup>5</sup> को बताता है - अर्थात् किसी दूसरे की ओर से निवेदन करने के विषय में है।

पौलुस ने प्रार्थना के लिए जिस चौथे शब्द का प्रयोग किया है उसको हम अनदेखा नहीं करना चाहते हैं: “धन्यवाद” (जो *εὐχαριστία*, *यूखारिस्टिया* से उद्धृत है)। हम अक्सर परमेश्वर से उस वस्तु के लिए विनती करते हैं जो हमारे पास नहीं है और जो हमारे पास है उसके लिए धन्यवाद करना भूल जाते हैं; या हम उसे हमें आशीषित करने के लिए विनती करते हैं और जब वह हमारे प्रार्थना का उत्तर दे देता है, तो उसे हम धन्यवाद कहना भूल जाते हैं। एक मेरे मित्र “धन्यवाद वृहस्पतिवार” मनाता है। वृहस्पतिवार की प्रार्थना में कोई भी जरूरत की प्रार्थना सम्मिलित नहीं है। बल्कि, इसके विपरीत उसके प्रार्थना में जो

परमेश्वर ने उसके लिए किया है उसके प्रति आभार और धन्यवाद व्यक्त करता है। “प्रार्थना” के लिए प्रयोग किए गए चौथे शब्द *प्रशंसा करना* दर्शाता है। जब हम प्रार्थना में परमेश्वर के निकट जाते हैं, तो उसके साथ हमारे वार्तालाप में हमारी आवश्यकता, श्रद्धायुक्त भय, चिंता, और प्रशंसा प्रतिबिंब होना चाहिए।

प्रार्थना “सभी लोगों के लिए की जानी चाहिए।” आइए हम सावधानी पूर्वक वाक्यांश “सभी लोगों” पर ध्यान केंद्रित करें। झूठे उपदेशकों के बारे में क्या है (1:3, 4)? सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें। हुमिनयुस और सिकन्दर के बारे में क्या विचार है (1:20)? सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें। उन लोगों के लिए क्या करें, जो तीमुथियुस का विरोध करते हैं और उसका अपमान करते हैं (4:12)? सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें। अरितिमिस<sup>6</sup> के पुजारियों और अन्य देवी-देवताओं के पुजारियों के लिए क्या करें? सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

“लोगों” के लिए यूनानी शब्द *ἄνθρωπος* (*आन्थ्रोपोस*) है। यह “मनुष्यों” के लिए प्रयोग किए दो यूनानी शब्दों में से एक है; दूसरा शब्द *ἀνήρ* (*आनेर*) है। *आन्थ्रोपोस* “किसी भी लिंग के व्यक्ति” के लिए एक जातिसूचक शब्द है।<sup>7</sup> यह अंग्रेजी शब्द “mankind” के समान है। नियमानुसार, *आनेर* “एक स्त्री के विपरीत, एक युवा पुरुष” की पहचान करता है।<sup>8</sup> 2:1-7 में “पुरुष” के लिए यूनानी शब्द *आन्थ्रोपोस* है। हमें सबके लिए प्रार्थना करने की आवश्यकता है।

**आयत 2.** पौलुस ने एक विशिष्ट समूह के लिए प्रार्थना करने के लिए आग्रह किया है: **राजाओं और सब ऊँचे पदवालों के निमित्त।** पौलुस के दिनों में “राजाओं” (बहुवचन *βασιλεύς*, *बसीलेयुस*) में शासक और प्रशासक जो शासक के अधीन होते थे वर्गीकृत किए गए थे (देखें मत्ती 17:25)। यूनानी वाक्यांश जिसका अनुवाद “सब ऊँचे पदवालों” का यथा अर्थ “वे सभी जो ऊँचे पदों पर नियुक्त हैं।” इसके अंतर्गत स्थानीय अधिकारी के साथ-साथ राजकीय स्तर पर जो नियुक्त किए गए हैं वे भी सम्मिलित हैं (देखें प्रेरितों. 19:31, 35, 38)।<sup>9</sup> यह शब्दावली हमारे नेता, देश के शासक, न्यायालय के सदस्य और संसद, राज्य व क्षेत्रीय नेता, और स्थानीय नेताओं के लिए लागू होता है। हमें इनके लिए प्रार्थना करने में चूक नहीं करनी है, क्योंकि ये ही निर्णय लेते हैं और उसका सीधा प्रभाव हम पर पड़ता है।

पौलुस ने हमको कहा कि जो अधिकारी हैं हमें उनके लिए प्रार्थना करना है इसलिए कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएँ। “विश्राम” और “चैन” पर्यायवाची हैं: “विश्राम” (*ἤρεμος*, *एरेमोस*) “चैन” के जैसा है,<sup>10</sup> और “चैन” (*ἡσυχίος*, *हेसूखेओस*) का अर्थ “उत्पात रहित” है।<sup>11</sup> यदि इन शब्दों का पर्यायवाची निकाला जाए तो “विश्राम” बाहरी सुख चैन की ओर संकेत करता है (हमारे चारों ओर की सुख चैन का वातावरण) और “चैन” भीतरी शांति की ओर संकेत करता है (हमारे हृदयों में पाए जाने वाली शांति)।<sup>12</sup>

पौलुस ने आगे यह भी कहा कि हमें सारी भक्ति और गम्भीरता में शान्तिपूर्ण जीवन बिताना है। चैन का जीवन बिताने के लिए चैन के स्रोत के बारे में विचारे

बिना नहीं जीया जा सकता है। जो कुछ परमेश्वर ने हमें दिया है उसके प्रति धन्यवादित रहने के साथ ही, प्रभु चाहता है कि हम “सारी भक्ति और गम्भीरता” में जीवन बिताएं।

“भक्ति” 1 और 2 तीमुथियुस और तीतुस की पत्रियों का प्रमुख शब्द है; इन पत्रियों में इस शब्द का दस बार उल्लेख किया गया है। “भक्ति” संयुक्त यूनानी शब्द (εὐσεβεία, *यूसेबेईया*) का हिंदी अनुवाद है जो दो शब्दों से संयुक्त होकर बना है: εὖ (यू, “भला”) और σεβोμαι (*सेवोमाई*, “भक्त होना”)।<sup>13</sup> इसमें “परमेश्वर का महिमामय भय”<sup>14</sup> और “अच्छा और पवित्र जीवन के स्रोत पर विशेष जोर देते हुए, परमेश्वर के प्रति पवित्र भय संलग्न होना”<sup>15</sup> सम्मिलित है।

“गम्भीरता” (σεμνότης, *सेमनोटेस*) शब्द इस बात पर केन्द्रित है कि किस प्रकार का जीवन परमेश्वर के लोगों को जीना है। यह “उस व्यवहार की ओर संकेत करता है जो साधारण जीवन से हटकर है और इसलिए यह आदर के योग्य है,”<sup>16</sup> की ओर संकेत करता है। इस परिभाषा में एक महत्वपूर्ण शब्द “हटकर” है: हमें इस संसार के स्तर से हटकर या ऊपर उठकर जीना है। “गम्भीरता” के साथ जीने का तात्पर्य यह नहीं है कि हम स्वयं के जीवन का आनंद न उठा सकें, बल्कि यह हमें यह बताता है कि हंसने का उचित समय क्या है और कब हमें गम्भीर होना है (देखें सभो. 3:4)।

**आयत 3.** यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता और भाता भी है। “यह” संभवतः आयतों 1 और 2 में उल्लेखित प्रार्थना से संबंधित है। “यह” पौलुस ने कहा “अच्छा लगता है” (καλός, *कालोस*) अर्थात् जो “श्रेष्ठ” या “सुन्दर” है।<sup>17</sup>

उसने यह भी कहा, “यह . . . परमेश्वर को भाता भी है।” “भाता” (ἀποδέκτοσ, *अपोडेक्टोस*) का तात्पर्य “स्वागतम, . . . अच्छा लगना” है।<sup>18</sup> एक मसीही के लिए यह मानदण्ड होना चाहिए जिसके द्वारा सब कुछ परखा जाना चाहिए: क्या यह “परमेश्वर को स्वीकार्य है”? कई लोग इसके अनुसार चलते हैं: “क्या यह *मुझे* प्रसन्न करता है? क्या यह *मुझे* भाता है?” जो प्रश्न हमें पूछना है वह यह है कि “क्या यह *परमेश्वर* को भाता है?”

परमेश्वर के बारे में कहते हुए, पौलुस ने एक असामान्य वाक्यांश “परमेश्वर हमारा उद्धारकर्ता” प्रयोग किया है।<sup>19</sup> परमेश्वर को हमारे “उद्धारकर्ता” के रूप में कई कारणों से समझा जा सकता है: उसने हमसे प्रेम किया (यूहन्ना 3:16); उसने अपने पुत्र को हमारे लिए मरने के लिए भेजा (1 यूहन्ना 4:14); वह हम पर दया करता है (1 पतरस 1:3); उसकी आज्ञा मानकर जब हम उसकी ओर आते हैं तो वह हमारे पापों को क्षमा करता है (प्रेरितों. 2:36-38); जब हम लगातार बच्चों के समान पाप करते हैं और जब हम अपना पाप मान लेते हैं तो वह हमारे पापों को क्षमा करता है (1 यूहन्ना 1:9); किसी दिन वह उनको जो उससे प्रेम करते हैं उन्हें वह जीवन का मुकुट देगा (याकूब 1:12)।

**आयत 4.** सुसमाचार की सार्वभौमिकता के बारे में, हम एक *सार्वभौमिक* इच्छा पर आते हैं: परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता की यह इच्छा है कि *सब* मनुष्यों

का उद्धार हो (बल दिया गया है)। “मनुष्य” एक जातिसूचक शब्द ἄνθρωπος (आन्थ्रोपाँस) से लिया गया है; परमेश्वर चाहता है कि *सब* उद्धार पाएं (2 पतरस 3:9; देखें यहैजकेल 18:23)। जबकि नये नियम में “उद्धार” (σῶζω, सोत्ज़ो) के कई अर्थ हैं, यह आमतौर पर पाप के दोष से उद्धार पाने के बारे में बताता है।<sup>20</sup> इस अनुच्छेद में अनंतकाल के लिए उद्धार पाने पर जोर दिया गया है।

परमेश्वर चाहता है कि हम “सब मनुष्यों” के लिए प्रार्थना करें (2:1) क्योंकि वह “सब मनुष्यों” का उद्धार चाहता है (2:4)। इफिसुस के झूठे उपदेशकों की यह मान्यता थी कि उद्धार कुछ चुने हुए लोगों के लिए था, ये वे कुछ चुने हुए लोग उनके संभ्रांत समूह के लोग थे; लेकिन पौलुस ने सिखाया कि उद्धार *सब* के लिए है।

पौलुस का यह वक्तव्य कि परमेश्वर की यह इच्छा है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो, एक लंबी अवधि तक विवाद का केन्द्र बिंदु रहा है। कुछ लोग (जिनको आमतौर पर सार्वभौमिकता कहा जाता है) यह सिखाते हैं कि परमेश्वर सब का उद्धार करेगा। प्रमाण के रूप में वे लूका 2:4 जैसे आयतों का उदाहरण देते हैं। उनका कहना है कि “इच्छा” (θέλω, थेलो) का अर्थ “चाहना, . . . चाहता” है।<sup>21</sup> उनका तर्क यह है कि चूँकि परमेश्वर की यह इच्छा है कि सब का उद्धार हो और क्योंकि वह कुछ भी कर सकता है (मत्ती 19:26), इसलिए वह सब का उद्धार करेगा।

जबकि, यीशु ने कहा कि “चौड़ा है वह मार्ग जो विनाश को ले जाता है, और *बहुतेरे* हैं जो उसमें प्रवेश करते हैं” (मत्ती 7:13; बल दिया गया है; देखें 7:23)। यदि हमारे पास केवल 1 तीमुथियुस ही होता, तब भी हम जान लेते कि सभी उद्धार नहीं पाएंगे: यह संभव है कि वे “शैतान का सा दण्ड पाएं” (3:6); “न्याय” का दिन आ रहा है (5:24); हम “विनाश के फंदे में फंस” सकते हैं (6:9)।

हाँ परमेश्वर चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो, लेकिन उसने मनुष्यों को स्वतंत्र इच्छा भी प्रदान की है। मानवता, जो “उद्धार पाएंगे” और जो “उद्धार नहीं पाएंगे” की बीच बंटा हुआ है: जो परमेश्वर की आज्ञा मानेंगे (मरकुस 3:35) और जो आज्ञा नहीं मानेंगे, जो प्रभु की निमंत्रण स्वीकार करेंगे (मत्ती 11:28) और जो निमंत्रण स्वीकार नहीं करेंगे। दुर्भाग्यवश, बाइबल यह बताती है कि आज्ञा मानने वालों से आज्ञा न मानने वालों की संख्या अधिक होगी (मत्ती 7:13, 14)।

फिर भी, विवाद हमको अदभुत सार्वभौम इच्छा जो इन आयतों में स्पष्ट की गई है, उससे हमारा ध्यान न हटाने पाए: परमेश्वर की इच्छा यह है कि *सब* मनुष्यों का उद्धार हो। हमें इसे व्यक्तिगत बनाना चाहिए: हम में से हर एक यह कह सकता है, “परमेश्वर *मेरे* बारे में चिंतित है और वह चाहता है कि *मेरा* उद्धार हो!” (हमें यह भी स्मरण रखना होगा कि आज हम जितने लोगों से मिलेंगे उन सब से परमेश्वर प्रेम करता है और वह चाहता है कि उनमें से हरेक व्यक्ति उद्धार पाएं!)

इसके साथ ही परमेश्वर सब लोगों के लिए कुछ और भी चाहता है: वह

“चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो” और सत्य को भली भाँति पहचान लें। “पहचानना” यूनानी शब्द ἐπιγνώσις (एपिग्रोसिस) का अनुवाद है, जो “ज्ञान” (γνῶσις, नोसिस) के लिए प्रयोग किए गए पूर्वसर्ग ἐπί (एपि) द्वारा जोर दिया गया है। कुछ लोगों की मान्यता यह है कि यह “सटीक या पूर्ण ज्ञान” दर्शाता है।<sup>22</sup>

परमेश्वर चाहता है कि हम “सत्य” (ἀλήθεια, आलेथैया) को भली भाँति पहचान लें। “सत्य” क्या है? यीशु ने कहा कि परमेश्वर का वचन ही सत्य है (यूहन्ना 17:17)। पौलुस ने तीमुथियुस को कहा कि वह “सत्य के वचन” को ठीक रीति से काम में लाए (2 तीमु. 2:15; बल दिया गया है)। “सत्य” परमेश्वर की स्वभाव का प्रगटीकरण है (देखें यूहन्ना 14:6); यह मनुष्यों को दिए गए उसके प्रकाशन का व्यापक शब्द है। प्रभु चाहता है कि सब मनुष्य सत्य को जानें और पहचानें।<sup>23</sup>

**आयत 5.** पौलुस का परमेश्वर की सार्वभौम इच्छा के बारे में वक्तव्य आयत 5 और 6 में परमेश्वर के सार्वभौम बलिदान की योजना के प्रकाशन के साथ व्यक्त किया गया है। यह आयत क्योंकि परमेश्वर एक ही है, कथन से प्रारंभ होता है।<sup>24</sup> यह यहूदी मत का प्राथमिक विश्वास था (व्यव. 6:4; देखें मरकुस 12:29) और मसीहियत का भी प्राथमिक विश्वास है (इफि. 4:6)। यह सत्य बहु ईश्वरवाद का विरोधाभासी है, जो प्रतिहिंसक और स्वेच्छाचारी समझे जाते थे। (जो लोग बहु ईश्वरवादी हैं उनके लिए मसीहियत एक बड़ी राहत लेकर आती है कि एक ही सच्चा परमेश्वर है। बहुत से लोग अपने ईश्वरों के भय के साये में रहते हैं। एक सत्य परमेश्वर के बारे में जानकारी और उस पर विश्वास करने के द्वारा, जो उनसे प्रेम करता है, उनके जीवन में बड़ी स्वतंत्रता आ सकती है।<sup>25</sup>)

आगे पौलुस यह जारी रखता है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है। एक “बिचवई” (μεσότης, मेसीटेस) यथा शब्द “एक मध्यस्थ है।” यह शब्द μέσος (मेसोस, “मध्य”) और εἶμι (यूमी, “जाओ”) <sup>26</sup> का संयुक्त रूप है। मेसीटेस का अर्थ “दो दलों के बीच किसी भी प्रकार के मतभेद दूर करने या किसी सामान्य लक्ष्य में पहुँचने के लिए मध्यस्थ करने वाला,” <sup>27</sup> एक “बिचवई करने वाला” है।<sup>28</sup> परमेश्वर और मनुष्यों के बीच केवल एक ही बिचवई करने वाला है: “यीशु मसीह।”

“परमेश्वर और मनुष्य के बीच” में वाक्यांश “मनुष्य” शब्द आन्थ्रोपोस से उद्धृत है, जिसका अर्थ सब मनुष्यों से है। पाप के कारण मनुष्य परमेश्वर से अलग कर दिया गया (यशा. 59:1, 2)। किसी को मनुष्य और परमेश्वर के बीच बनी खाई को शीघ्रपाती शीघ्र पाटना था। वह कोई और नहीं बल्कि स्वयं “मनुष्य मसीह यीशु” है।

जातिसूचक शब्द आन्थ्रोपोस का अनुवाद “मनुष्य” है जो वाक्यांश “मनुष्य मसीह यीशु” में भी प्रयोग किया गया है। पौलुस, मसीह के पुलिंग होने को जोर नहीं दे रहा है, बल्कि वह उसकी मनुष्य जाति पर जोर दे रहा है। जगत को परमेश्वर के पास वापस लाने के लिए यीशु को हम में से एक होना था। वह “देहधारी हुआ, और हमारे बीच डेरा किया” (यूहन्ना 1:14)। “इस कारण उस को

चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने; जिस से वह उन बातों में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, एक दयालु और विश्वास योग्य महायाजक बने ताकि लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित्त करे” (इब्रा. 2:17)।

आयत 5 का केन्द्र मसीह पर है जो परमेश्वर और पापियों के बीच बनी खाई पाटने का कार्य अपनी मृत्यु के द्वारा कर रहा है (देखें 2:6), लेकिन यह जानकर मन प्रसन्न हो जाता है कि हमारा मसीही हो जाने के बाद भी वह हमारा बिचवई बना रहता है। वाक्य वर्तमानकाल में है: “परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है।” यीशु अभी भी मनुष्य है। जब उसने देहधारण किया तो उसने अपने ईश्वरत्व को नहीं त्यागा, और जब वह पिता के पास गया तो उसने अपने मनुष्यत्व को नहीं त्यागा।<sup>29</sup> परमेश्वर के दाहिने हाथ की ओर एक ऐसा है “जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुःखी हो सके . . . इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बाँधकर चलें” (इब्रा. 4:15, 16)।

**आयत 6.** एकलौता बिचवई सार्वभौम बलिदान का कार्य भी करता है जब उसने अपने आप को सबके छुटकारे के दाम में दे दिया (बल दिया गया है)। यह अनुच्छेद मत्ती 20:28 में यीशु के वक्तव्य की प्रतिध्वनि है: “मनुष्य का पुत्र; वह इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे, और बहतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे।” “छुड़ौती” हमें उस संदर्भ में सोचने के लिए विवश करता है जब किसी अगुआ किए गए व्यक्ति के छुड़ौती के लिए धन चुकाया जाता है। नये नियम के समय यह शब्द दास को छुड़ाने के लिए चुकाए गए दाम के संदर्भ में प्रयोग किया जाता था। मसीह ने छुड़ौती का दाम चुकाकर (स्वयं उसका जीवन) हमें पाप की दासता से छुड़ा लिया है।

“छुड़ौती” संयुक्त यूनानी शब्द ἀντίλυτρον (एण्टीलुट्रान) का अनुवाद है, जो λύτρον (लुट्रान, “छुड़ौती”<sup>30</sup>) से उद्धृत है और जिसका पूर्वसर्ग ἀντί (एण्टी, “स्थान में”<sup>31</sup>) है। इस शब्द का प्रयोग प्रतिस्थापन बलिदान (प्रायश्चित्त) की विचारधारा को रेखांकित करता है, जैसे इसके पूर्वसर्ग “के लिए” (ὕπερ, हूपेर) शब्दांश “सब” में भी किया गया है। इस अनुच्छेद में हूपेर का अर्थ “उसकी ओर से”<sup>32</sup> अपने ऊपर हमारे दण्ड लिए हमारे स्थान पर यीशु हमारे लिए मरा (यशा. 53:6; 2 कुरिं. 5:21)।<sup>33</sup>

एक बार फिर से सुसमाचार की सार्वभौमिकता चिह्नित की गई है: यीशु ने अपना जीवन केवल यहूदियों के छुड़ौती के लिए ही नहीं दिया (जिस प्रकार यहूदीकरण करने शिक्षक सिखाते हैं)। उसने कुछ चुने हुए लोगों के छुड़ौती के लिए अपना जीवन नहीं दिया (जिस प्रकार झूठे उपदेशक उपदेश देते थे)। बल्कि उसने अपना जीवन सब मनुष्यों के छुड़ौती के लिए दिया - चाहे उनकी राष्ट्रीयता कुछ भी क्यों न हो, चाहे उनके जीवन की स्थिति कुछ भी क्यों न हो, चाहे उनके शिक्षा का स्तर कुछ भी क्यों न हो।

क्या परमेश्वर सब का उद्धार करेगा या नहीं उद्धार करेगा (सार्वभौमिकता),



उसके संबंध में अंतिम शब्द भी कहा जाना चाहिए। वाक्यांश “सबके छुटकारे” का अर्थ यह है कि सब मनुष्यों के लिए उपाय कर लिया गया है। मसीह की मृत्यु भूत, वर्तमान, और भविष्य के लोगों के उद्धार के लिए पर्याप्त था। फिर भी, यह तो हरेक व्यक्ति विशेष की अपनी स्वतंत्रता है कि क्या वह प्रभु के प्रेम की इस उपाय को विश्वास और आज्ञाकारिता के द्वारा स्वीकार करता है कि नहीं (देखें मत्ती 7:21)।<sup>34</sup>

उसके बलिदान की सार्वभौमिकता के बारे में सारांश निकालने का यह सर्वोत्तम स्थान है - लेकिन आयत 6 में कुछ और भी शब्द हैं। बाकी के वक्तव्य इतना संक्षेप में है कि यह रहस्यमय जान पड़ता है: **और उसकी गवाही ठीक समय पर दी गई।** “गवाही”<sup>35</sup> क्या थी? इन दोनों को मिलाकर इसके कई संभावित उत्तर हैं: इस पारिभाषिक शब्द का संकेत यीशु ही की मृत्यु के लिए हो सकता है (जो इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर चाहता है कि सभी उद्धार पाएँ), या यह उस मृत्यु के संबंध में प्रेरणा पाए हुए लोगों की गवाही के लिए हो सकता है।

इस वाक्यांश “उचित [या सही] समय पर” का क्या?<sup>36</sup> यह इस तथ्य को बल दे सकता है कि यीशु “ठीक समय पर” मरे (रोमियों 5:6), या यह इस तथ्य को प्रतिबिंबित कर सकता है कि मसीह की मृत्यु की गवाही ठीक समय पर दी गई। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने दुःख उठाने वाले सेवक के विषय गवाही दी थी (उदाहरण के लिए यशा. 53), और उन्होंने अपने सन्देश ठीक समय पर दिए थे। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने आने वाले मसीहा के विषय गवाही दी (मत्ती 3:11), और उसने ऐसा ठीक समय पर किया। यीशु के मारे जाने, गाड़े जाने, और पुनरुत्थान के पश्चात, प्रेरितों ने सब के लिए दिए गए उसके बलिदान के विषय में गवाही दी (जैसा कि प्रेरितों 2:22-38 में है); उनकी गवाही भी ठीक समय पर दी गई।

**आयत 7.** आयत 6 के अन्त में दिए गए रहस्यमय वाक्यांश का चाहे जो भी सटीक अर्थ हो, उसका विचार परमेश्वर के द्वारा पौलुस को दिए गए निर्देश की ओर परिवर्तन कर देने के लिए कार्य करता है। उसने आगे कहा, **मैं सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता, कि मैं इसी उद्देश्य से प्रचारक और प्रेरित और अन्यजातियों के लिये विश्वास और सत्य का उपदेशक ठहराया गया।** “इसके लिए,” या “इसी उद्देश्य से” (NIV), संकेत करता है कि पौलुस का कार्य यीशु के बलिदान के विषय गवाही देना था। शब्द “मैं” बल देता है। “ठहराया गया” *τίθημι* (टिथेमी) से है, जिसका मौलिक अर्थ होता है “रखना” या “स्थाना।” इस संदर्भ में इसका और अधिक विशिष्ट अर्थ “किसी कार्य या उद्देश्य के लिए नियुक्त किया जाना” है।<sup>37</sup>

पौलुस को “प्रचारक” (κῆρυξ, केरुक्स) नियुक्त किया गया था। एक केरुक्स सामाजिक घोषणाएं करता था; वह एक “घोषणा करने वाला” था।<sup>38</sup> घोषणा करने वाला अपने स्वामी से सन्देश प्राप्त करता था और फिर निकट तथा दूर जाकर, उस सन्देश को सुनाने के लिए लोगों को एकत्रित करता था। उसका सन्देश उसका अपना नहीं होता था; उसे केवल वही सन्देश कहना होता था जो

उसे सौंपा गया था। वह अपने स्वामी का प्रतिनिधि था; उसका अनुचित व्यवहार उसके स्वामी पर प्रतिबिंबित होता था।<sup>39</sup>

पौलुस को “प्रेरित” (ἀπόστολος, *अपोस्तोलौस*<sup>40</sup>), वह जो स्वयं प्रभु ही के द्वारा नियुक्त किया गया और भेजा गया। विशेषतया, प्रभु ने उसे अन्यजातियों के लिए प्रेरित चुना था (प्रेरितों 9:15; 22:21; रोमियों 11:13)।

इसके अतिरिक्त, उसे “अन्यजातियों के लिए विश्वास और सत्य का उपदेशक [διδασκαλος, *डिडैसक्लौस*]” नियुक्त किया गया था। “विश्वास” (πίστις, *पिसतिस*) और “सत्य” (ἀλήθεια, *अलेथिया*) वर्णन करने में सहायता करते हैं कि पौलुस कैसे सिखाता था, अर्थात्, विश्वासयोग्यता और सच्चाई के साथ। एक अन्य संभावना है कि ये पारिभाषिक शब्द जो वह सिखाता था उसकी ओर संकेत करते हैं, अर्थात्, वह वचन जो विश्वास उत्पन्न करता है (रोमियों 10:17), वह वचन जो सत्य था (यूहन्ना 17:17)।

प्रेरित होने के नाते, पौलुस ने परमेश्वर से प्रेरणा द्वारा सन्देश प्राप्त किया। प्रचारक होने के नाते, उसने उस सन्देश की घोषणा की। अब हमारे पास प्रेरित नहीं है (हमारे लिए प्रेरणा पाया हुआ सन्देश बाइबल में है), परन्तु हमारे पास प्रचारक और शिक्षक हैं। परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए सुसमाचार प्रचार के कार्य में हमारी जो भी व्यक्तिगत भूमिका हो, प्रभु हमारी सहायता करे कि हम उसे विश्वासयोग्यता के साथ निभा सकें।

आयत 7 में हम सशक्त शब्दों “मैं सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता” को पाते हैं। यह एक और प्रमाण है कि 1 तीमुथियुस व्यक्तिगत पत्र तो था किन्तु निजी नहीं; वह औरों के साथ बांटे जाने के लिए था। तीमुथियुस को किसी आश्वासन की आवश्यकता नहीं थी कि जब पौलुस ने अपने परिचय के गुण बताए तब वह झूठ नहीं बोल रहा था, परन्तु मण्डली में कुछ को थी।

आयत 7 में एक शब्द जिसकी ओर हम ध्यान खींचना चाहते हैं वह “अन्यजातियों” है। पौलुस के कहने का अभिप्राय था कि उसे घोषणा करने वाला एवं प्रेरित नियुक्त करने का उद्देश्य था कि वह “अन्यजातियों के लिये उपदेशक” ठहरे। “अन्यजाति” ἔθνος (*एथनोस*) से है, जो अंग्रेज़ी के “एथनिक” और “एथनिसिटी” पारिभाषिक शब्दों का मूल है। *एथनोस* का अनुवाद “जाति”<sup>41</sup> भी हो सकता है। प्रेमी परमेश्वर और स्व-बलिदान करने वाले उद्धारकर्ता के विषय पौलुस को प्रेरणा से मिला सन्देश सभी जातियों, सब के लिए था। यह सन्देश सदा ही विश्वव्यापी रहा है।

## पुरुषों को प्रार्थना करने का निर्देश (2:8)

इसलिये मैं चाहता हूँ कि हर जगह पुरुष, बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें।

आयत 8. इस पद का आरंभ इसलिये से होता है, जो संभवतः 2:1-7 की

ओर संकेत करता है।<sup>42</sup> पौलुस ने निर्देश दिए थे कि प्रार्थनाएं “सब मनुष्यों के लिये की जाएँ” क्योंकि परमेश्वर “चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो” और उसने अपने पुत्र को “सब के छुटकारे के दाम में दे दिया” (2:1, 4, 6)। क्योंकि यह सत्य है, इसलिए यह अनिवार्य था कि प्रार्थनाएं की जाएँ। “इसलिए” पौलुस ने कहा, मैं चाहता हूँ . . . । “चाहता हूँ” (βούλωμαι, *वोउलोमाई*) का अर्थ है “इच्छा, योजना, [या] संकल्प”<sup>43</sup> और इसमें “आधिकारिक आज्ञा देने का भाव है।”<sup>44</sup>

पौलुस ने कहा, “मैं चाहता हूँ” कि पुरुष . . . । “पुरुष” (*एन्थ्रोपोस*) के लिए सामान्य शब्द - शब्द जो मनुष्यों का संकेत करता है, चाहे पुरुष या महिला - आयतों 1, 4, और 5 में आता है। यहाँ आयत 8 में “पुरुष” के लिए अधिक विशिष्ट शब्द *ἀνδρας* (*अन्द्रास*, *अनेर* का बहुवचन) प्रयोग हुआ है। यह नियमबद्ध है कि *अन्द्रास* विशेष रूप से “एक वयस्क मानव पुरुष को . . . स्त्री की तुलना में” प्रयोग होता है।<sup>45</sup> कभी-कभी *अनेर* का एक रूप ऐसे संदर्भ में भी प्रयोग होता है जब शब्द का पुलिंग होना महत्व नहीं रखता है (जैसा कि मत्ती 14:35; लूका 11:31) में, परन्तु “यहाँ . . . यह स्पष्टतः आयत 9 की ‘स्त्रियाँ’ की तुलना में है।”<sup>46</sup>

पौलुस क्या चाहता था कि पुरुष करें? वह चाहता था कि वे प्रार्थना किया करें। “प्रार्थना” (*προσεύχομαι*, *प्रोस्यूकोमाई*) प्रार्थना के लिए सबसे सामान्य शब्द *προσευχή* (*प्रोस्यूक*) का क्रिया रूप है। पौलुस चाहता था कि हर जगह पुरुष प्रार्थना करें, इस आज्ञा को “विश्वव्यापी लागू किया, . . . जहाँ कहीं भी कलीसिया स्थित है”<sup>47</sup> (देखें 1 कुरि. 14:33)। पौलुस चाहता था कि पुरुष सार्वजनिक आराधना सभाओं में प्रार्थनाएं करें। विलियम हेन्ड्रिक्सन ने लिखा, “इस आग्रह का कुल मूल यह है कि सार्वजनिक सभाओं में पुरुष न कि स्त्रियाँ हाथ उठाकर खड़े हों और ऊँचे शब्दों में प्रार्थनाएं करें।”<sup>48</sup>

जब पुरुष प्रार्थना करें, तब पौलुस चाहता था कि वे पवित्र हाथों को उठाएं। जब कुछ लोग वाक्यांश “पवित्र हाथों को उठाकर” को पढ़ते हैं, उनका निष्कर्ष होता है कि पौलुस प्रार्थना करने की एक श्रेष्ठ अवस्था को सूचित कर रहा था। अधिकांश विद्वान सहमत हैं कि पौलुस का यह उद्देश्य नहीं था। जे. एन. डी. केली ने कहा, “पुरातन समय से, अन्यजाति मूर्तिपूजकों, यहूदियों, और मसीहियों, सभी के लिए सामान्यतः, प्रार्थना करने की एक सामान्य स्थिति थी, कि वे हाथों को फैला तथा उठाकर, हथेलियों को ऊपर की ओर करे हुए खड़े हों।”<sup>49</sup> उठाए हुए खाली हाथ आवश्यकता तथा सृष्टिकर्ता पर निर्भरता को दिखाते थे।<sup>50</sup>

पवित्र-शास्त्र में प्रार्थना करने की अनेकों स्थितियाँ उल्लेखित हैं, जिनमें खड़े हुए (भजन 27:2), बैठकर (2 शमूएल 7:18), घुटनों पर या दण्डवत में (उत्पत्ति 17:3), और अपने आप को भूमि पर आँधे मुँह लेटाकर (गिनती 14:5) - सिर को झुकाए हुए (उत्पत्ति 24:26), या आँखें आकाश की ओर लगाए हुए (यूहन्ना 17:1)। प्रार्थना करना परमेश्वर से बातें करना है। ऐसा करते समय शरीर की क्या अवस्था है उसका कोई विशेष महत्व नहीं है।<sup>51</sup>

वाक्यांश “पवित्र हाथों को उठाकर” में बल हाथों की स्थिति पर नहीं बरन जीवन की पवित्रता पर है।<sup>52</sup> “हाथ शरीर का वह भाग हैं जो मनुष्य को कुछ करने के लिए सक्षम करते हैं”<sup>53</sup>; बाइबल में ये अधिकांशतः मनुष्य जो करता है उसे दिखाते हैं (देखें भजन 24:2, 4)।

पौलुस ने कहा कि जो हाथ प्रार्थना में उठें वे “पवित्र” हों। “पवित्र” *होसियोस* से है, जिसका अर्थ होता है “भक्त,” “परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले”<sup>54</sup> प्रार्थना के प्रभावी होने के लिए, प्रार्थना को करने वाले का प्रभु के साथ सही संबंध होना चाहिए।<sup>55</sup>

यदि आयत 8 का पहला भाग जीवन में पवित्रता पर बल देता है, तो अंतिम भाग में मन की पवित्रता भी सम्मिलित है: पौलुस ने पुरुषों से कहा कि वे **बिना क्रोध और विवाद** के प्रार्थना किया करें। “क्रोध” *ὀργή* (*ओर्जे*) से है, जिसमें “सशक्त अप्रसन्नता, . . . क्रोध” सम्मिलित होता है।<sup>56</sup> यह “मन की बनी रहने वाली स्थिति है, अधिकांशतः पलटा लेने के दृष्टिकोण से।”<sup>57</sup>

“विवाद” *διαλογισμός* (*डायालोगिस्मोस*: *डाय* [“द्वारा”] धन *लोगिस्मोस* [“तर्क/युक्ति”]) से है। यह जब कोई किसी दूसरे के तर्क से असहमत होता है तब होने वाले तीखे वार्तालाप के लिए हो सकता है, या ऐसे तर्क के लिए जिससे संदेह उत्पन्न होता हो।<sup>58</sup> इसके लिए NASB में “मतभेद” आया है, NIV में “विवाद”; और KJV में “संदेह” आया है।

यह संभव है कि मण्डली में कुछ लोग सार्वजनिक प्रार्थनाओं को अपना क्रोध व्यक्त करने के लिए प्रयोग कर रहे थे। अधिक संभावना है कि पौलुस के मन में था कि वे भाई जो गड़बड़ियां करने वाले *नहीं* थे, वे ही सार्वजनिक प्रार्थनाओं में अगुवाई करें। प्रार्थना के वांछित परिणामों में से थे विश्राम और चैन (2:2), परन्तु ऐसा होना संभव नहीं था यदि प्रार्थनाओं में अगुवाई करने वाले बड़बोले और झगड़ालू हों।

पौलुस ने सार्वजनिक प्रार्थनाओं के लिए दिए गए निर्देशों को आरंभ करते हुए जो कहा उसका अभिप्राय था, “जब तुम आराधना के लिए एकत्रित हो, तो मैं चाहता हूँ कि जो कार्य तुम सबसे पहले करो वह है प्रार्थना करना।” परन्तु उसने साथ ही यह भी जोड़ा कि प्रार्थनाएं केवल प्रेम और एक मनता की आत्मा में ही होनी चाहिए। तात्पर्य यह है कि हमारी आराधना परमेश्वर को तब ही ग्रहण योग्य होगी।

## एक मसीही स्त्री का व्यवहार (2:9-15)

जिस परिच्छेद का अब हम अध्ययन करने जा रहे हैं वह मसीहियत के पहले उन्नीस सौ वर्षों में विवादास्पद नहीं था। परन्तु आज, यह बहुत विवादास्पद है। जॉन डब्ल्यू. स्टौट के अनुसार, “पास्टोरल पत्रियों में . . . ये संभवतः सबसे अधिक विवादास्पद आयतें हैं।”<sup>59</sup> इसलिए हमें सतर्कता के साथ उनके पास जाना चाहिए। ऐसा कोई भी विषय जो ग्रह की 50 प्रतिशत जनसंख्या से संबंधित है,

व्याख्याकर्ता के लिए चिन्ता की बात है।<sup>60</sup>

इस परिच्छेद का विवाद में होना इस कारण नहीं है कि इसे समझना बहुत कठिन है।<sup>61</sup> अधिकांश व्याख्याकर्ता उसके मूल सन्देश से सहमत हैं। समस्या यह है कि वे इसे पसन्द नहीं करते हैं। एक लेखक ने इस परिच्छेद के लिए कहा कि यह “वर्तमान संवेदनाओं के अनुसार [नए नियम के] सबसे अधिक रोषकारी परिच्छेदों में से एक।”<sup>62</sup>

कुछ लोगों को लगता है कि पौलुस का सन्देश आधुनिक युग के लिए असंगत है।<sup>63</sup> वे निश्चित समझते हैं कि पौलुस एक स्थानीय समस्या को संबोधित कर रहा था और उसके निर्देश, उसके अपने समय में भी, सभी स्थानों की कलीसियाओं पर लागू करने के लिए नहीं थे। औरों का मानना है कि पौलुस केवल उस समय की पुरुषों के वर्चस्व की परंपराओं को और दृढ़ कर रहा था, और ये परम्पराएं संसार के अनेकों भागों में अब बदल गई हैं।

हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं कि लेख यह सुझाव देता है कि पौलुस के शब्द इफिसुस की मण्डली के ही लिए नहीं थे। उसने 2:8 में लिखा, “हर जगह पुरुष प्रार्थना किया करें” (बल दिया गया है)। यह नियम है कि जब पौलुस कहता है “हर जगह” (ἐν παντί τόπω, एन पंटी टोपो),<sup>64</sup> तो उसका अर्थ होता है “सभी स्थानों पर” (देखिए NIV) - और ऐसा कोई कारण नहीं है कि इस वाक्यांश का यहाँ कोई और अर्थ समझा जाए। वॉल्टर एल. लेइफेल्ड ने 1 तीमुथियुस 1:8 की शब्दावली के विषय लिखा,

“[यह] 1 कुरिन्थियों 14:33 के ‘जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है’ को स्मरण करवाता है . . . । इस तथ्य से हमें इस बात के विरुद्ध सचेत हो जाना चाहिए कि हमारे परिच्छेद के पौलुस के निर्देश केवल इफिसुस की कलीसिया ही के लिए थे।”<sup>65</sup>

पौलुस ने मात्र अपने समय की परंपराओं ही को दृढ़ नहीं किया। जब उसने अपने निर्देशों के कारणों को बताया, तो उसने प्रथम शताब्दी के रीति-रिवाजों का आवेदन नहीं किया। वरन, उसने उन घटनाओं का उल्लेख किया जो कम से कम चार हज़ार वर्ष पहले, आदम और हव्वा के साथ, घटित हुई थीं (2:13, 14)।

इस लेख के अध्ययन के समय, हमें अपने मनो से, जहाँ तक संभव हो, किसी भी पूर्वधारणा और पक्षपात को निकाल देना चाहिए। हम यह पूछने नहीं जा रहे हैं कि “इन आयतों के विषय अधिकांश लोग क्या मान्यता रखते हैं?” या, “पढ़े-लिखे लोगों में इसके विषय क्या सर्वसम्मति है?” और न ही यह कि “आपकी या मेरी पसन्द क्या है?” वरन हमें यह पूछना चाहिए कि “पौलुस ने स्त्रियों के सार्वजनिक आराधना में होने के लिए क्या कहा? पौलुस क्या चाहता है कि उस स्थिति में स्त्रियों की भूमिका के विषय हम सीखें?”

## स्त्रियों के वस्त्र (2:9)

वैसे ही स्त्रियाँ भी संकोच और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आप को संवारे; न कि बाल गूँथने और सोने और मोतियों और बहुमोल कपड़ों से।

आयत 9. क्योंकि पौलुस का ध्यान चरित्र पर था, इसलिए यह कुछ लोगों के लिए अचरज का विषय होगा कि उसके निर्देशों में से प्रथम, आराधना में स्त्रियों के वस्त्रों के विषय में हैं। परन्तु, लोग जिस प्रकार का वस्त्र पहनते हैं वह उनके चरित्र के बारे में बहुत कुछ कह सकता है।

इस आयत का आरंभ होता है शब्द **वैसे ही** (ὡσαύτως, *होसौतोस*) के साथ। पौलुस ने पुरुषों को निर्देश दिए थे; अब उसी प्रकार से, उसने स्त्रियों को भी निर्देश दिए। उसने लिखा, **मैं चाहता हूँ कि<sup>66</sup> स्त्रियाँ भी संकोच और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आप को संवारे; न कि बाल गूँथने और सोने और मोतियों और बहुमोल कपड़ों से।** “स्त्रियाँ” γυνή (*गुने*) का बहुवचन रूप है, जो “एक वयस्क महिला”<sup>67</sup> को दर्शाता है।

यह ध्यान देने योग्य है कि पौलुस ने यह नहीं कहा कि “मैं चाहता हूँ के स्त्रियाँ उचित वस्त्र पहनें” वरन उसने कहा “मैं चाहता हूँ कि स्त्रियाँ सुहावने वस्त्रों से अपने आप को संवारे।” संवारे κοσμέω (*कोसमियो*) से है<sup>68</sup> जिसकी परिभाषा है “किसी को सजाने के द्वारा आकर्षित करने वाला स्वरूप देना।”<sup>69</sup> वाक्यांश में शब्द “सुहावने” (κόσμιος, *कोसमियोस*) उसी मूल से है। हेन्ड्रिक्सन ने इस वाक्य का अनुवाद इस प्रकार किया: “स्त्रियों को अपने आप को सुहावने वस्त्रों से सजाना चाहिए।”<sup>70</sup> पौलुस स्त्रियों को आज्ञा नहीं दे रहा था कि वे नीरस वस्त्र पहनें। वास्तव में उसने संकेत दिया कि स्त्रियों का आकर्षक दिखना ठीक है। यहाँ NEB में “आकर्षक रीति से वस्त्र पहनना” आया है (देखिए तीतुस 2:10)।

पौलुस ने इस बात पर अवश्य बल दिया कि स्त्रियों के वस्त्र सम्मोहक या भड़कीले न हों। शब्द “सुहावने” के अतिरिक्त, उसने पारिभाषिक शब्दों “संकोच” और “संयम” का भी प्रयोग किया। पौलुस द्वारा प्रयुक्त इन वर्णनात्मक शब्दों में भिन्नता करना कठिन है। यह अनुवादों की तुलना करने के द्वारा स्पष्ट हो जाता है। उदाहरण के लिए “संकोच” और “संयम” का स्थान अनुवादों में भिन्न पाया जाता है।

इनके अर्थ कुछ अंश तक समान होते हुए भी, शब्दों पर कुछ टिप्पणियाँ तो बनती हैं। NASB में, αἰδώς (*अइदोस*) का अनुवाद “संकोच” किया गया है।<sup>71</sup> वॉल्टर बाऊर का शब्दकोश कहता है “यह पारिभाषिक शब्द . . . परंपरा के लिए आदर व्यक्त करता है” और फिर उदाहरण देता है: “स्त्री की शालीनता।”<sup>72</sup> हम वाक्यांश “परंपरा के लिए आदर” पर विचार करें। “परंपरा” “सामान्य व्यवहार या प्रथा,” “स्वीकृत या निर्धारित रीति” है।<sup>73</sup> हम जिस भी समाज में हों, वहाँ पर सामान्य सहमति। इस बात के लिए, वचन स्त्रियों के वस्त्रों के संबंध में सामान्य सहमति की बात कर रहा है। पौलुस यह नहीं सुझा रहा था कि एक

मसीही स्त्री को समाज द्वारा निर्धारित आदरणीय पहिरावे का पालन करना चाहिए (दिखें रोमियों 12:2), परन्तु वह यह संकेत कर रहा था कि एक मसीही स्त्री को वह कभी नहीं पहनना चाहिए जिस पर समाज को आपत्ति होती है। इस अभिप्राय से, उसे “परंपरा का आदर” करना चाहिए। इफिसुस के शहर में वेश्याएँ थीं जिनका स्वरूप भड़कीला और मोहित करने वाला होता था। मसीही स्त्रियों को “गलियों की स्त्री” के समान वस्त्र नहीं पहनने थे।

“संयम” σωφροσύνη (सोफ्रोसुने) से है, जिसका अर्थ है “भली समझ-बूझ, संतुलन, और आत्म-नियंत्रण का व्यवहार।”<sup>74</sup> कुछ पहिरावा आराधना के लिए उचित होता है, और कुछ अनुचित। प्रत्येक मसीही स्त्री को अपने पहिरावे के विषय भला निर्णय करना चाहिए। (प्रत्येक पुरुष को भी ऐसा करना चाहिए।)

अपने विचार को आगे बढ़ाते हुए पौलुस ने अनुचित “सजावट” के चार उदाहरण दिए: “न कि बाल गूँथने और सोने और मोतियों और बहुमोल कपड़ों से।” पौलुस के निर्देश हमें स्मरण करवाते हैं उस आज्ञा की जो पतरस ने अविश्वासियों की पत्नियों को दी:

और तुम्हारा श्रृंगार, दिखावटी न हो, अर्थात् बाल गूँथना, और सोने के गहने, या भांति - भांति के कपड़े पहनना। वरन तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है (1 पतरस 3:3, 4)।

यह सामान्यतः माना जाता है कि पतरस के ये निषेध पक्के नहीं हैं। वरन, पतरस बाहरी और भीतरी सजावट में तुलना कर रहा था, और इस पर ज़ोर दे रहा था कि भीतरी का महत्व अधिक है। इसी तुलना और महत्व को पौलुस के शब्दों में भी देखा जा सकता है।

पौलुस ने पहले कहा, “न कि बाल गूँथने।” उसके मन में किसी स्कूल-छात्रा का साधारण बालों को गूँथना नहीं था, परन्तु रोमी समाज के बड़े परिश्रम से बनाई गई बालों के सज्जा थी। बालों को ऊँचा एकत्रित किया जाता था और फिर उन्हें रत्नों से सजाया जाता था। “उन्हें चमकीला और भड़कीला बनाने के लिए कुछ भी रख नहीं छोड़ा जाता था . . . । उन दिनों में *गुथें हुए बाल* बहुधा *संपन्नता* को दिखाते थे। वे विलासिता के साधन होते थे!”<sup>76</sup> NEB में आया है “बालों की सुसंपन्न सज्जा नहीं।”

फिर पौलुस ने जोड़ा, “सोने और मोतियों और बहुमोल कपड़ों से” नहीं। फिर से पृष्ठभूमि रोमी समाज में धन का उदार प्रदर्शन है। प्लिनी प्राचीन ने इस अपव्यय को लोल्लिया पौलिना, जो सम्राट कैलिग्युला की तीसरी पत्नी बनी थी, के उदाहरण से चित्रित किया। वह जब किसी साधारण से भोज में भी सम्मिलित होती थी तब भी वह “सिर, बालों, कानों, गर्दन, और उंगलियों को पन्नों और मोतियों से एकांतर ढके और चमकते हुए होती थी, जिसका कुल मूल्य 40,000,000 सेस्तर्सेस था।”<sup>77</sup>

संभवतः इफिसुस में अधिकांश मसीही महिलाएँ पौलुस द्वारा उल्लेखित ऐसा

अपव्यय करने में असमर्थ थीं, परन्तु मण्डली में कुछ धनी थीं (देखें 6:9, 10, 17-19)। पौलुस के शब्द संभवतः धनी मसीही महिलाओं के लिए थे जो मंडलियों को अपने धन के प्रदर्शन का स्थान बनाती थीं। इस बात पर बल देने की आवश्यकता नहीं है कि आराधना सभा परमेश्वर की महिमा के लिए है, अपनी महिमा के लिए नहीं; परन्तु इफिसुस में ऐसा करना आवश्यक था।

आयत 9 को छोड़ने से पहले, हमें ध्यान करना चाहिए कि शैलियाँ सदा ही परिवर्तनशील रहती हैं। पौलुस के दिनों में समस्या आवश्यकता से अधिक वस्त्र पहनने की थी। संसार के कुछ भागों में आज समस्या आवश्यकता से कम वस्त्र पहनने की - या ऐसे वस्त्र पहनने की है जो शरीर से बिलकुल चिपके रहते हैं जिससे कल्पना के लिए कुछ शेष नहीं रह जाता है। फैशन चाहे कितने भी बदल जाएँ, स्त्रियाँ सदा ही ऐसे वस्त्र पा सकती हैं जिन्हें अधिकांश लोग “संकोच” और “संयम” वाले समझते हों। पौलुस के कहने का अभिप्राय था कि “जब तुम आराधना के लिए आओ तो इस प्रकार के वस्त्र पहन कर आओ।”<sup>78</sup>

कुछ जवान स्त्रियाँ अनिश्चित हो सकती हैं कि “संकोच” और “संयम” वाले क्या हैं। तीतुस को लिखी अपनी पत्री में पौलुस ने वृद्ध स्त्रियों को निर्देश दिए कि वे जवान स्त्रियों को शिक्षा दें (तीतुस 2:3-5)। इसमें यह मान लिया जाता है कि जवान स्त्रियाँ सीखने के लिए तैयार हैं। यदि किसी जवान स्त्री को अपने वस्त्रों के उचित होने को लेकर कोई प्रश्न है, तो उसे वृद्ध और अधिक परिपक्व मसीही स्त्री से, जिसका वह आदर करती है, बात करनी चाहिए।

## स्त्रियों को क्या पहनना चाहिए (2:10)

**10पर भले कामों से, क्योंकि परमेश्वर की भक्ति करनेवाली स्त्रियों को यही उचित भी है।**

**आयत 10.** यदि मसीही स्त्री को बालों की कीमती सज्जा और विलासिता के साथ रत्नों तथा वस्त्रों से अपने आप को नहीं संवारना है, तो वह अपने आप को कैसे संवार सकती है? पहले उद्धृत किए गए खण्ड में, पतरस ने इस प्रश्न का उत्तर दिया कि उसका “छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है” (1 पतरस 3:3, 4)। आयत 10 में पौलुस ने भी इसका उत्तर समान रीति से दिया। वह चाहता था कि स्त्रियाँ अपने आप को **भले कामों से** संवारें। पतरस का बल मनोहर आत्मा पर था, जबकि पौलुस का मनोहर जीवन पर।

जैसा पहले ध्यान किया जा चुका है, पौलुस और पतरस कह रहे थे कि यह अनिवार्य नहीं है कि मसीही स्त्रियाँ नीरस और सादी दिखाई दें। परन्तु वे यह कह रहे थे कि उनकी प्राथमिकता बाहरी स्वरूप नहीं होना चाहिए। वरन उसके स्थान पर, उनका बल चरित्र की सुंदरता पर होना चाहिए जिसका परिणाम भले कार्य - औरों की सहायता करना, दुखियों को उभारने में सहायता करना, खोए



हुओं के साथ सुसमाचार को बांटना, हों। ऐसी सुंदरता अनन्तकाल तक बनी रहती है।

पौलुस ने आयत 10 का अन्त इन शब्दों के साथ किया: **क्योंकि परमेश्वर की भक्ति करनेवाली स्त्रियों को यही उचित भी है।** “उचित” *πρέπω* (*प्रेपो*) से है, जो उसका वर्णन करता है जो “ठीक” या “उपयुक्त” है।<sup>79</sup> जिस शब्द का अनुवाद “करनेवाली” (*ἐπαγγέλλομαι*, *एपैनजेलोमाई*) हुआ है, वह भारी है। इसका संबंध इस दावे के साथ है कि व्यक्ति किसी क्षेत्र में पारंगत है; इसमें प्रतिज्ञा है और उस प्रतिज्ञा को पूरा करने के प्रति कटिबद्ध होने का भाव भी।<sup>80</sup>

यह दावा शब्द “भक्ति” (*θεοσεβεία*, *थियोसेबिया*) पर केंद्रित है। यद्यपि यह वही शब्द नहीं है जिसका अनुवाद आयत 2 में “भक्ति” (*εὐσεβεία*, *यूसेबिया*) किया गया है, परन्तु यह संबंधित है। *थियोसेबिया*, जो नए नियम में केवल यहीं पाया जाता है, “ईश्वर” (*θεός*, *थियोस*) के लिए यूनानी शब्द को “भक्त होने” (*σεβόμεαι*, *सेबोमाई*) के साथ जोड़ता है। मुख्यतः इसका अर्थ “परमेश्वर के प्रति श्रद्धा” है परन्तु इसमें परमेश्वर से संबंधित बातों के लिए श्रद्धा भी सम्मिलित हो सकती है।<sup>81</sup> NASB के अनुवादकों ने पारिभाषिक शब्द “भक्ति” (देखें KJV) को वरीयता दी, जबकि कुछ अन्य अनुवादों (RSV; NEB) में “धर्म” या “धार्मिकता” आया है। NIV अर्थ को “ऐसी स्त्रियाँ जो परमेश्वर की आराधना करने का दावा करती हैं” तक सीमित कर देती है।

पौलुस द्वारा प्रयुक्त शब्दावली के अभिप्राय अनेकों हैं। पौलुस ने जिन्हें संबोधित किया वे परमेश्वर के प्रति श्रद्धा रखने का दावा करते थे। यथार्थ में उन्होंने अपने ऊपर उस गहरी श्रद्धा को बनाए रखने वचनबद्धता को ले लिया था। बपतिस्मा लेने के द्वारा, उन्होंने मूलतः यह कहा था, “हम उससे प्रेम रखेंगे और उसके आज्ञाकारी रहेंगे।” अब वे कह रहे थे कि हम अपनी इस प्रतिज्ञा को पूरा कर रहे हैं। परन्तु यह दावा करना भर ही पर्याप्त नहीं था। उन्हें, जो वे कह रहे थे, अपने जीवनो के द्वारा *प्रमाणित* भी करना था - अपने भले कार्यों और वस्त्रों के द्वारा।<sup>82</sup>

**स्त्रियों के लिए आवश्यकताएँ (2:11, 12)**

**11**स्त्री को चुपचाप पूरी अधीनता से सीखना चाहिए। **12**में कहता हूँ कि स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।

**आयतें 11, 12.** पौलुस द्वारा पहले 2:8 में प्रयुक्त शब्द संकेत करते हैं कि स्त्रियों को आराधना सभा में प्रार्थना करने में अगुवाई नहीं करनी चाहिए। अब उसके कहने का अर्थ था कि स्त्रियों को सार्वजनिक आराधना में सिखाना या प्रचार करना नहीं चाहिए: **स्त्री को चुपचाप पूरी अधीनता से सीखना चाहिए। मैं कहता हूँ कि स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।** पौलुस ने इसके समान निर्देश कुरिन्थियों को भी दिए:

स्त्रियां कलीसिया की सभा ["मण्डलियों"] में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परन्तु आधीन रहने की आज्ञा है: जैसा व्यवस्था में लिखा भी है। यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपने-अपने पति से पूछें, क्योंकि स्त्री का कलीसिया ["मण्डली"] में बातें करना लज्जा की बात है (1 कुरि. 14:34, 35)।

हम अपने ध्यान का केन्द्र आयत 12 से आरंभ करते हैं, जो हमें सिखाती है कि स्त्रियों को सार्वजनिक आराधना सभा में क्या नहीं करना चाहिए: "मैं कहता हूँ कि स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।" "मैं . . . कहता हूँ" ἐπιτρέπω (एपीट्रेपो) से है, जिसका अर्थ "अनुमति" या "आज्ञा" भी हो सकता है।<sup>84</sup> पौलुस अधिकार के साथ कहा रहा था।<sup>85</sup> वह सार्वजनिक आराधना सभा में स्त्री शिक्षकों या प्रचारकों पर अपना प्रेरणा पाया हुआ मत व्यक्त करने पर था।

पौलुस ने पहले कहा कि वह "मण्डली" में स्त्री को "उपदेश" देने की अनुमति नहीं देता है। "उपदेश" διδάσκω (डिडास्को, "निर्देश देने") से है।<sup>86</sup> हमें ध्यान करना चाहिए कि यह स्त्रियों के उपदेश देने के विरुद्ध दृढ़ निषेध न था (और न है)।

तीतुस 2:3-5 में, पौलुस ने वृद्ध स्त्रियों को जवान स्त्रियों को सिखाने के लिए कहा। महान आज्ञा (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16), जो सुसमाचार प्रचार की आज्ञा देती है, मसीही स्त्रियों पर भी वैसे ही लागू होती है जैसे मसीही पुरुषों पर। जब मसीही यरूशलेम से तितर-बितर हुए, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे (प्रेरितों 8:1, 4); प्रत्यक्षतः इसमें स्त्रियाँ सम्मिलित थीं। कुछ स्त्रियों को भविष्यवाणी करने का वरदान मिला था (प्रेरितों 21:9; 1 कुरि. 11:5), जिसके अन्तर्गत परमेश्वर से मिले सन्देश को बाँटना भी होता था। इसके अतिरिक्त, पौलुस के शब्द स्त्री द्वारा पुरुष को सिखाने के विरुद्ध कट्टर मनाही नहीं थे। अपुल्लोस प्रचारक को निर्देश देने में प्रिस्किल्ला ने अक्विला की सहायता की थी (प्रेरितों 18:26)।<sup>87</sup> अनेकों गैर-मसीही पति अपनी मसीही पत्नी के वचनों और उदाहरण के द्वारा मसीही हो गए हैं। सिखाने और प्रचार के संबंध में, पौलुस द्वारा लेख में दिया गया निषेध स्त्रियों द्वारा सामाजिक आराधना सभा में सिखाने या प्रचार न करने के लिए है।

बहुतेरे जो यह मानते हैं कि पौलुस द्वारा इस खण्ड में दी गई शिक्षा सभी कलीसियाओं के लिए नहीं थी, वे एक अन्य खण्ड का प्रयोग करते हैं, यह प्रमाणित करने के लिए कि पौलुस ने भिन्न परिस्थितियों में स्त्रियों को प्रचार करने की अनुमति दी थी। यह खण्ड इससे ऊपर बताया गया है: 1 कुरिन्थियों 11:5, जो स्त्रियों के भविष्यवाणी के वरदान से संबंधित है।<sup>88</sup> इस आयत का प्रयोग स्त्री प्रचारकों को उचित ठहराने के लिए करना चकरा देने वाला है, क्योंकि इसके तीन अध्याय के बाद हम पौलुस द्वारा कहे गए ये शब्द पाते हैं: "स्त्रियां कलीसिया [मण्डलियों की सभा] में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं" (1 कुरि. 14:34)। रेमण्ड सी. केलसी ने लिखा,

स्त्रियों द्वारा भविष्यवाणी करने को [1 कुरि.] 14:34 के निषेध के अन्तर्गत समझना चाहिए; पौलुस स्त्रियों द्वारा सार्वजनिक सभा में स्त्रियों के भविष्यवाणी करने के संदर्भ में नहीं कह रहा है, वरन उन अवसरों के संदर्भ में जब वे अपने इस वरदान का प्रयोग कर सकें।<sup>89</sup>

भविष्यवाणी का वरदान पाई हुई स्त्रियों को अपने वरदान का प्रयोग करना था, परन्तु आराधना सभा में नहीं।

आयत 12 में पौलुस के सामान्य निर्देश अन्य किसी भी अगुवाई की भूमिका के लिए भी हैं (जैसे कि पवित्रशास्त्र के पढ़ने<sup>90</sup> या गीत गाने में अगुवाई करने): “या पुरुष पर आज्ञा चलाने” (2:12)। “पुरुष” *ἀνὴρ* (*अनेर*) से है, जो स्त्री नहीं वरन पुरुष दिखाने के लिए यूनानी शब्द है।

आयत 12 में “आज्ञा चलाए” *ἀποθεντέω* (*अथेंटियो*)<sup>91</sup> से है, जिसमें अधिकार जमाने का भाव भी सम्मिलित हो सकता है (देखें NEB)।<sup>92</sup> यह आयत 11 “अधीनता” शब्द का विलोम है: “स्त्री को चुपचाप पूरी अधीनता से सीखना चाहिए” हम पहले वाक्यांश “पूरी अधीनता से” को देखते हैं। “पूरी” *πᾶς* (*पस*, “सभी”) से है और “अधीनता” *ὑποταγή* (*हपोतागे*) से। बाऊर की शब्दावली *हपोतागे* की परिभाषा “अधीनता, आधिपत्य, मातहत होना स्वीकार की गई स्थिति”<sup>93</sup> बताती है। इस शब्द का क्रिया रूप “प्रमुखतः सैनिक शब्द है” जो “कमतर पद” के लिए है।<sup>94</sup> *हपोतागे* की परिभाषा देते हुए, शब्दावली लिखती है, “क्रमवार संबंधों की प्रणाली की संरचना में व्यक्ति को अपने सही स्थान की पहचान होनी चाहिए।”<sup>95</sup> वॉरेन डब्ल्यू. वीयर्सबी ने “अधीनता” को ऐसे परिभाषित किया: “घर और कलीसिया में परमेश्वर के क्रम को पहचानना, और सहर्ष उसका पालन करना।”<sup>96</sup>

जब हम आराधना के लिए एकत्रित होते हैं, यदि स्त्री को सिखाने या प्रचार करने की अनुमति नहीं है, तो उसे क्या करना चाहिए? आयत 11 में पौलुस ने इस कार्य को बताया: “स्त्री को चुपचाप पूरी अधीनता से सीखना चाहिए” जैसा कि शब्द “चाहिए” संकेत करता है, क्रिया अनिवार्य भाव में है; यह वाक्य एक आज्ञा है।<sup>98</sup> “चुपचाप” *ἡσυχία* (*हेसुकिया*) से है, और “शान्त, बिना परेशानी के”<sup>99</sup> की दशा का वर्णन करता है। कुछ अनुवादों में “बिना बोले हुए” (देखें KJV; NKJV; NRSV), परन्तु अधिकांश अनुवाद “चुपचाप” को ही पसन्द करते हैं। “सीखना चाहिए” *μανθάνω* (*मंथनो*) से है, जिसमें “ज्ञान में बढ़ना . . . निर्देशों द्वारा”<sup>100</sup> मिला होता है।

पौलुस ने यह नहीं कहा कि जब प्रचारक प्रचार कर रहा हो तब स्त्रियों को बस सुनते ही रहना चाहिए। वरन यह कि उन्हें सन्देश को ग्रहण के प्रति सजग होना चाहिए; उसे प्रयास करके “सीखना चाहिए” साथ ही, उन्हें ऐसा “चुपचाप” करना चाहिए। हम पौलुस के निर्देश को अपने शब्दों में इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं: सीखने के लिए, हमें अपने “मुंहों को बंद और मनो को खुला रखना चाहिए।” यह एक भला परामर्श है, चाहे व्यक्ति पुरुष हो अथवा स्त्री।

कुछ लोग, जो यह मानते हैं कि पौलुस के निर्देश सबके लिए नहीं थे, आयत 11 से उनका निष्कर्ष है कि पौलुस इफिसुस की स्त्रियों को सिखाने से इसलिए मना कर रहा था क्योंकि वे परमेश्वर के वचन को नहीं जानती थीं। इन व्यक्तियों का तर्क है कि, जैसे ही स्त्रियाँ पवित्रशास्त्र को सीख लें, उसके पश्चात उनके लिए सिखाना और प्रचार करना ठीक हो जाएगा। लेकिन हमारे पास ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि इफिसुस की स्त्रियाँ परमेश्वर के वचन के बारे में वहाँ के पुरुषों से अधिक अनजान थीं। इफिसुस में कलीसिया लगभग एक दशक से विद्यमान थी (देखिए प्रेरितों 18; 19)। स्त्री और पुरुषों, दोनों ही को सीखने का अवसर प्रदान किया गया था।<sup>101</sup> यह अनुमान लगाना कि उस शहर में कोई भी स्त्री मसीही सिद्धांतों के बारे में ज्ञान नहीं रखती थी, अनुचित होगा।

बहुत से व्याख्याकर्ताओं ने एक प्रश्न उठाया है, “पौलुस ने स्त्रियों को आराधना सभा में चुपचाप रहने का निर्देश देना क्यों आवश्यक समझा?” “अभी तक पाए गए शिलालेखों से पता चलता है कि रोमी काल में [इफिसुस में] शहर के पुजारियों में से चौथाई, स्त्रियाँ थीं।”<sup>102</sup> कुछ मसीही स्त्रियों पर इसका प्रभाव पड़ा होगा। यह भी संभव है कि मसीह में अपनी स्वतंत्रता के बारे में सीखने के पश्चात कुछ स्त्रियों ने उस स्वतंत्रता का आराधना सभा में अधिकार जताने के द्वारा दुरुपयोग किया। हम वहाँ की तब की स्थिति के बारे में निश्चित नहीं हो सकते हैं। हमारे पास केवल पौलुस के सरलता से समझे जाने वाले शब्द हैं: “मैं कहता हूँ कि स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।”

### इसके कारण (2:13-15)

<sup>13</sup>क्योंकि आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई; <sup>14</sup>और आदम बहुकाया न गया, पर स्त्री बहुकाने में आकर अपराधिनी हुई। <sup>15</sup>तौभी स्त्री बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी, यदि वह संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहे।

**आयतें 13, 14.** यह निर्देश देने के पश्चात कि पुरुष, न कि स्त्रियाँ, सार्वजनिक प्रार्थनाओं तथा प्रचार की अगुवाई करेंगी, पौलुस ने अपनी इन प्रेरणा से पाई आज्ञाओं के कारण बताया। उसने परंपरा का हवाला नहीं दिया, परन्तु उत्पत्ति के आरंभिक अध्यायों तक गया - आदम और हव्वा की सृष्टि, और उसके बाद उनके गिरने के बाइबल के वृत्तान्त को।<sup>103</sup>

सबसे पहला कारण जो दिया गया वह सृष्टि से संबंधित है: **क्योंकि आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई।** परमेश्वर ने आदम को धरती की मिट्टी से बनाया (उत्पत्ति 2:7) और फिर हव्वा को आदम की एक पसली से बनाया (उत्पत्ति 2:21, 22)। व्याख्याकर्ताओं ने रब्बियों द्वारा इस घटना की व्याख्या से अनेकों पृष्ठ भर दिए हैं, परन्तु ये चर्चाएं हमारे लिए कोई विशेष चिंता का विषय

नहीं हैं। नए नियम के प्रेरणा पाए हुए शिक्षकों ने रब्बियों की परंपराओं से बंधे होने की कोई आवश्यकता नहीं समझी (देखें मत्ती 5:21, 22, 27, 28, 31-34, 38, 39, 43, 44)। इसके स्थान पर हमारी मुख्य चिंता है कि पौलुस ने घटना का प्रयोग किस प्रकार किया। प्रत्यक्षतः उसका तर्क था कि, क्योंकि आदम को पहले बनाया गया था, इसलिए उसे अगुवा होना चाहिए।

दुःख की बात यह तथ्य है कि आदम इस विषय में असफल रहा - जैसा कि यहाँ उल्लेखित बाइबल की दूसरी घटना से प्रमाणित होता है: **और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकाने में आकर अपराधिनी हुई।** परमेश्वर ने आदम से कहा था कि उसे भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को नहीं खाना है (उत्पत्ति 2:15-17), परन्तु अदन की वाटिका में सर्प ने प्रवेश किया और हव्वा को बहकाया जिससे फिर उसने उस वृक्ष में से खाया (3:1-6)। उसके पश्चात “और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया” (3:6)। उसने “अपनी पत्नी की बात सुनी” (3:17), “उसको तू ने खाया” (3:6)।

जब पौलुस ने कहा, “और आदम बहकाया न गया,” तब वह यह संकेत नहीं कर रहा था कि इसलिए आदम निर्दोष था। अन्य स्थान पर उसने पहले पाप के लिए आदम को उत्तरदायी ठहराया (देखें रोमियों 5:12-21)।<sup>104</sup> पौलुस कह रहा था कि, मानवजाति के इतिहास के उस गंभीर पल में, जब आदम को अगुवाई प्रदान करनी चाहिए थी, वह ऐसा करने में असफल रहा। निश्चय ही, इसका परिणाम, त्रासदीपूर्ण रहा। आदम और हव्वा को बगीचे से बाहर निकाल दिया गया (उत्पत्ति 3:24), और दोनों श्रापित हुए। हवा पर डाले गए श्राप में ये शब्द भी थे “तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा।” (उत्पत्ति 3:16)।

उत्पत्ति की इस कहानी से व्याख्याकर्ताओं ने अनेकों प्रकार के उपयोग निकाल लिए हैं, परन्तु हम पौलुस के उपयोग के साथ बने रह कर भला करेंगे। आयत 13 का आरंभ “क्योंकि” (γάρ, गार) से होता है, जिसका अनुवाद “इसलिए” भी हो सकता है। “क्योंकि” आयतें 13 और 14 में पौलुस के शब्दों को उसके साथ बांधता है जिसकी वह चर्चा कर रहा था: स्त्रियों को प्रचार नहीं करना चाहिए *क्योंकि* आदम को पहले बनाया गया और *क्योंकि* पाप हव्वा ने पहले किया। पौलुस ने यह नहीं कहा कि इससे यह प्रमाणित होता है कि स्त्रियाँ कम दर्जे की या दुर्बल या बहकाए जाने के लिए पुरुषों से अधिक भोली होती हैं।<sup>105</sup> उसके कहने का तात्पर्य सीधा सा है: यह पवित्रशास्त्र से प्रमाण है कि सार्वजनिक सभाओं की अगुवाई पुरुषों को करनी चाहिए और स्त्रियों को नहीं। इससे अधिक कोई भी उपयोग कल्पना है।

**आयत 15.** इस विचाराधीन खण्ड की सबसे अधिक उलझाने वाली आयत यही है। जैसे हम आयत 15 की ओर बढ़ते हैं, हमें दो तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए। (1) यद्यपि अर्थों में बहुत भिन्नताएं हैं, बहुत से व्याख्याकर्ता पौलुस द्वारा इन शब्दों के लिखने के सामान्य उद्देश्य से सहमत हैं:<sup>106</sup> इससे पहले के उसके द्वारा प्रयुक्त शब्द स्त्रियों के प्रति नकारात्मक समझे जा सकते थे, इसलिए

उसने चर्चा का अन्त स्त्रियों के लिए कुछ सकारात्मक कहने के द्वारा किया। (2) चाहे अर्थ निकालने के लिए यह खण्ड कठिन है, किन्तु यह उनके जैसा नहीं है, जिन्हें हम नए नियम के मुख्य-सत्य कह सकते हैं। क्योंकि यह बात है, इसलिए अर्थ निकालने के लिए सीमाएं विस्तृत होनी चाहिए। कुछ अर्थ औरों से अधिक संभव हैं, परन्तु अनेकों अर्थ अन्य स्थानों पर स्पष्ट खण्डों का उल्लंघन नहीं करते हैं।

आयत का आरंभ तौभी स्त्री बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी से होता है। इसकी व्याख्या की चुनौती को प्रमुख करने से पहले हम कुछ लेखों की बातें देख लेते हैं। बाइबल के एक प्रोफेसर ने इसे छात्रों को “ठूठ दिखाना” बताया। यह आयत “ठूठों” से भरी पड़ी है, ऐसे शब्द या वाक्यांश जिनके प्रति विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

सबसे पहले, शब्द “स्त्री” NASB अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है। क्योंकि क्रिया तीसरा व्यक्ति एकवचन है, इसका शाब्दिक अनुवाद होगा “वह [एकवचन] बचाई [या “उद्धार”] पाएगी” (देखें KJV)। इससे प्रश्न उठता है कि आयत 15 में “वह” कौन है। इससे एकदम पहले की आयतें हव्वा के बारे में बात कर रही हैं। इसलिए कुछ ने निष्कर्ष निकाला है कि पौलुस हवा ही के बारे में बात जारी रखे हुए था, और उसे श्राप के साथ जीवन जीने के लिए क्या करने की आवश्यकता होगी।

अब यहाँ एक और शब्द आता है: “उद्धार”: जिस यूनानी शब्द का अनुवाद NASB में “उद्धार” हुआ है वह  $\sigma\upsilon\lambda\upsilon\omega$  (सोज़ो) से है, जिसका अधिक सामान्य अनुवाद “बचाना” है (देखें KJV; NKJV; NEB)। सोज़ो के अनेक प्रकार के अर्थ हो सकते हैं, जिनमें प्राकृतिक खतरों और कष्ट से बचाया जाना सम्मिलित है; परन्तु 1 तीमुथियुस में अन्य स्थानों पर, यह शब्द पाप से बचाए जाने के संदर्भ में है (1:15; 2:4; 4:16)।<sup>107</sup>

अगला शब्द है “द्वारा,” जो इस खण्ड में पूर्वसर्ग  $\delta\iota\acute{\alpha}$  (डिया) से है। डिया का संबंधकारक हाल<sup>108</sup> में अनुवाद “के माध्यम से”<sup>109</sup> हो सकता है। ऐसी स्थिति में, खण्ड यह कह सकता है कि, “वह बच जाएगी (पापों) से बच्चे जनने के द्वारा।” हम इस अनुवाद/व्याख्या का तुरंत ही खण्डन करते हैं, अनेकों कारणों से, जिनमें यह भी सम्मिलित है कि “परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता” (प्रेरितों 10:34)। निःसंतान होने के कारण कोई स्त्री दोषी नहीं ठहरेगी।

डिया का अधिक सामान्य अनुवाद है “द्वारा,” जैसे कि किसी के द्वारा या शहर में से होकर निकलना।<sup>110</sup> कुछ अनुवादकों का मानना है कि खण्ड को “वह बचाई (मृत्यु से छुड़ाई) जाएगी जब वह बच्चा जनने की प्रक्रिया से होकर निकलेगी।” परन्तु स्त्रियाँ, (भक्त, मसीही स्त्रियाँ भी) कभी-कभी बच्चे जनने में मर भी जाती हैं।

अभी के लिए “ठूठों” का इतना निरीक्षण पर्याप्त है। कैसे “स्त्री बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी” का अर्थ निकाला जाए? संभवतः सबसे उचित होगा कि आयत 15 में एकवचन “वह” को हवा न माना जाए, वरन पौलुस की इससे पहले

की “एक स्त्री” क्या कर सकती है (1 तीमु. 2:11, 12) की सामान्य चर्चा के अनुसार समझना चाहिए। जब पौलुस ने आयतें 11 और 12 में “एक स्त्री” के विषय बात की, तब उसका ध्यान किसी विशिष्ट स्त्री के संबंध में नहीं, वरन सामान्यतः स्त्रियों से था। यही आयत 15 में “वह” के लिए भी सत्य है; इसे “स्त्रीजाति” के लिए समझा जा सकता है।

पौलुस से अधिक शब्दों के प्रयोग का दोषी होने का जोखिम लेते हुए, हम उसके कथन का भावानुवाद इस प्रकार कर सकते हैं: “मुझे यह एहसास है कि मेरे स्त्रियों के संबंध में सार्वजनिक सभाओं में निषेध यह प्रभाव छोड़ सकते हैं कि मैं स्त्रियों की सराहना नहीं करता हूँ। परन्तु ऐसा नहीं है। सामान्यतः स्त्रियाँ योग्य और प्रतिभाशाली होती हैं। मेरी सेवकाई में सदा ही स्त्रियों ने अनेकों रीतियों से मेरी सहायता की है। लेकिन एक ऐसा अद्वितीय कार्य है जिसका मैं उल्लेख करना चाहूँगा - एक ऐसी योग्यता जो अधिकांश स्त्रियों में होती है परन्तु पृथ्वी पर किसी पुरुष में नहीं होती - वह है बच्चे जनना!”

कुछ इसमें जोड़ सकते हैं कि केवल स्त्री के माध्यम से ही मसीहा ने संसार में आना था। वे “बच्चे जनने” से पहले के निश्चित शब्द वर्ग (ἄνθρωπος, टेस) को एक विशेष जनने के लिए लेते हैं और निष्कर्ष निकलते हैं कि यह संभवतः सबसे महत्वपूर्ण जन्म जो हुआ: यीशु का जन्म, के विषय में है। चाहे यह आयत 15 का सटीक अर्थ है अथवा नहीं, यह स्त्रीजाति द्वारा परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों में निभाए गए अद्वितीय भूमिका की सूचक है।

साथ ही, “बच्चे जनना” को आलंकारिक भी समझा गया है जिसमें “एक भाग संपूर्ण के लिए प्रयोग होता है” (एक उपलक्ष),<sup>111</sup> जिससे “बच्चे जनना” “स्त्रियों की संपूर्ण भूमिका का कुल योग” है।<sup>112</sup> यदि ऐसा है तो, आयत 15 का पहला भाग मूलतः संकेत करता है कि स्त्री की उद्धार पाने की आशा पुरुष होने में नहीं, वरन स्त्री होने में है। संदर्भ में, इसमें आराधना में अगुवाई की भूमिका को न लेना, वरन चुपचाप रहकर सीखना सम्मिलित होगा।

लेकिन कहानी में इससे भी अधिक कुछ है। अन्त में हम आयत 15 के अंतिम भाग (तथा एक और “टूट”) को देखें: **यदि वह संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहे।** क्योंकि आयत में “वह” एकवचन है और “वे” बहुवचन है,<sup>113</sup> इसलिए कुछ यह निष्कर्ष निकालते हैं कि “वे” बच्चे जनने वाली माँ के अतिरिक्त व्यक्ति होंगे - संभवतः उसके बच्चे। क्योंकि “यदि” (ἐάν, ईयन) एक शर्त का परिचय करवाता है, इसलिए यह व्याख्या माँ का उद्धार उसके बच्चों के व्यवहार पर निर्भर कर देता है - एक ऐसा निष्कर्ष जिसे हमें तुरंत अस्वीकार करना है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि प्रेरणा पाए हुए लेखक कभी-कभी एकवचन शब्द प्रयोग करते हैं जिनका बहुवचन (सामूहिक) अर्थ होता है। उदाहरण के लिए, मूसा ने लिखा कि परमेश्वर ने कहा, “हम मनुष्य [एकवचन] को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे [बहुवचन] . . . सारी पृथ्वी पर . . . अधिकार रखें” (उत्पत्ति 1:26)। यद्यपि परमेश्वर ने आरंभ में

एक मनुष्य (“मनुष्य” के लिए इब्रानी शब्द אָדָם, ‘एडम है) को बनाया, परन्तु उसका दृष्टिकोण समस्त मानवजाति के लिए था। इसी प्रकार से चाहे आयत 15 एकवचन (“वह”) से आरंभ होती है, इसमें कहा गया सिद्धान्त समस्त स्त्रीजाति पर सामान्य लागू होता है।

पौलुस कुछ इस प्रकार से कह रहा था: “स्त्रियाँ अद्वितीय हैं। यह विशेषकर बच्चे जनने के लिए सही है। परन्तु उनको यह नहीं सोचना चाहिए कि वे मात्र इस अद्वितीय गुण के कारण बच जाएँगी। तथ्य यही है कि वे अन्य सभी के समान बचाई जाएँगी (यीशु के बलिदान के द्वारा; 2:6) ‘यदि वह संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहे।”

आयत 15 के अंतिम शब्द एक अच्छा संक्षिप्तकरण हैं मसीही जीवन व्यतीत करने में क्या कुछ सम्मिलित होता है; उनका, पुरुषों और स्त्रियों, दोनों के लिए महत्व होता है। “स्थिर रहे” μένω (मेनो) से है और ऐसे व्यक्ति की क्रिया को दिखाता है “जो छोड़ता नहीं है,” जो “बना”<sup>114</sup> रहता है और दृढ़ रहता है। यह जीवन भर के लिए है।

“विश्वास” (πίστις, पिसितिस) और “प्रेम” (ἀγάπη, अगापे) ऐसे पारिभाषिक शब्द हैं जिन्हें हम अपने अध्ययन में पहले देख चुके हैं।<sup>115</sup> विश्वास में बने रहना इस बात को सुनिश्चित करना है कि प्रभु में हमारा भरोसा दृढ़ बना रहता है। 1 कुरिन्थियों 13 के अनुसार, प्रेम में बने रहने का अर्थ है (अन्य बातों के साथ-साथ) धैर्य, दया, नम्रता, आदर, निःस्वार्थ होने, और उदारता में दृढ़ता से बने रहना।

यह पहली बार है कि हमने उस शब्द का सामना किया है जिसका अनुवाद “पवित्रता”<sup>116</sup> (ἁγιασμός, हैजियस्मोस) हुआ है, जो संकेत करता है कि किसी वस्तु को परमेश्वर के लिए “पृथक कर दिया गया है,” “अलग,” या “समर्पित” किया है। इस पारिभाषिक शब्द का अनुवाद “पवित्रता” या “पवित्रीकरण” किया जा सकता है।<sup>117</sup> इस लेख में यह विशेषकर “इस प्रकार से पृथक किए गए लोगों के व्यवहार” के साथ संबंधित है।<sup>118</sup> परमेश्वर हम में से प्रत्येक को चुनौती देता है: “पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ” (1 पतरस 1:16)।

खण्ड का अन्त शब्द “संयम” के साथ होता है, जो उसी शब्द से है जिसका आयत 9 में “संयम” (σωφοσύνη, सोफ्रोसूने) अनुवाद हुआ है। “संयम” “भले निर्णय, नियंत्रण, और अपने आप को वश में रखने का अभ्यास है।”<sup>119</sup>

विश्वास, प्रेम, पवित्रता, भला निर्णय लेना - ऐसे गुण हैं जिन्हें हम में से सब (दोनों पुरुष और स्त्रियों) में विकसित होना चाहिए। परमेश्वर चाहता है कि हम आत्मिक रूप से लगातार बढ़ते रहें।

कुछ देर के लिए हम शब्द “पवित्रीकरण” या “पवित्रता” की ओर लौटते हैं: जिस में यह गुण है उसे बाइबल में “पवित्र जन” कहा गया है। एक “पवित्र जन” वह नहीं है जो सिद्ध है, वरन वह जो प्रभु को समर्पित (पृथक किया हुआ) जीवन जी रहा है। हो सकता है कि यह मेरी कल्पना ही है, लेकिन मुझे लगता है कि मैंने अपने जीवन में संत पुरुषों से अधिक पवित्र जन स्त्रियों को देखा है। हम परमेश्वर



का धन्यवाद करें उन मसीही स्त्रियों के लिए जो पूरे मन के साथ वह बनने का प्रयास कर रही हैं जो परमेश्वर चाहता है कि वे हों।

## अनुप्रयोग

**जिसकी प्रत्येक पापी को आवश्यकता है (2:1-7)**

प्रत्येक पापी को चार बातों की आवश्यकता होती है: ऐसे लोग जो उसके प्रति इतनी चिन्ता करते हैं कि उसके लिए प्रार्थना करें (2:1, 2); एक परमेश्वर जो उसे उद्धार पाया हुआ देखना चाहता है (2:3, 4); एक उद्धारकर्ता जो उसके स्थान पर मरने के लिए तैयार है (2:5, 6); और कोई ऐसा जो उसके साथ सुसमाचार को साझा करेगा (2:7)।

**प्रार्थना: सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्राथमिकता (2:1)**

इफिसुस की मण्डली समस्याओं से भरी हुई थी। सदस्यों पर झूठे शिक्षक बुरा प्रभाव डाल रहे थे। कलीसिया के कम से कम कुछ तो ऐसे अगुवे थे जो वैसे नहीं थे जैसा उन्हें होना चाहिए था। हम ऐसी परिस्थिति का सामना कैसे करते? हम कह सकते हैं, “इन पुरुषों की, जो गलत बातें सिखा रहे हैं, वास्तविकता सबके सामने लानी चाहिए! हमें उनका बहिष्कार करना होगा!” संभवतः हमारी सबसे पहली प्रतिक्रिया होती कि कलीसिया की एक आपातकालीन सभा बुलाई जाए और ऐसा ही कर दिया जाए। पौलुस ने कहा “जो *पहला* कार्य करना है वह है *प्रार्थना!*” जब समस्याएँ हमें अभिभूत करने लगती हैं, हम कभी-कभी भूल जाते हैं कि सबसे पहली प्राथमिकता है प्रार्थना करना।

**सबके लिए प्रार्थना क्यों की जाए? (2:1)**

2:1 में, पौलुस ने आग्रह किया कि प्रार्थनाएं सबके लिए की जाएँ। क्यों? वेन ई. शौ ने इसके कई कारण सुझाए:<sup>120</sup> क्योंकि हमें सबके लिए चिन्तित होना चाहिए (2:1, 2); क्योंकि परमेश्वर सबके लिए चिन्तित रहता है (2:3, 4); क्योंकि मसीह सबके लिए चिन्तित रहता है (2:5, 6); क्योंकि परमेश्वर के प्रतिनिधि सबके लिए चिन्तित थे (2:7); और क्योंकि (पहले विचार की ओर लौटते हुए), परमेश्वर के लोग होने के कारण, हमें सबके लिए चिन्तित होना चाहिए (2:8)।

**उनके लिए प्रार्थना करें जो “ऊँचे पद वाले” हैं (2:2)**

पहला तीमुथियुस 2:2 नागरिक सरकार के प्रति मसीही विश्वासी के रवैये के लिए महत्वपूर्ण आयत है।<sup>121</sup> हमें ध्यान रखना चाहिए कि जब पौलुस ने कहा कि ऊँचे पद वालों के लिए प्रार्थना करें, “तब शासन करने वाला सम्राट नीरो था, जिसका अहंकार, क्रूरता, और मसीही विश्वास के प्रति बैर भली-भांति जाने जाते थे।”<sup>122</sup> फिर भी पौलुस ने कहा कि उसके लिए प्रार्थना करें। किसी ने कहा है,

“यदि आप व्यक्ति को आदर नहीं दे सकते हैं, तो कम से कम उसके पद को तो आदर दें।”

हम चाहे जहाँ भी रहें, जो भी राष्ट्र के अध्यक्ष का कार्य कर रहा है, हमें उसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए। हमें उसके स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।<sup>123</sup> हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि उसका साफ़ मन रहे और वह भले निर्णय ले सके। हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि वह अपनी राजनैतिक अभिलाषाओं की अपेक्षा देश के विषय अधिक चिन्तित हो। यदि वह एक अच्छा नेता है, तो हम उसके लिए परमेश्वर के धन्यवादी हो सकते हैं। यदि वह जैसा उसे होना चाहिए उससे कमतर है, तो हम प्रार्थना कर सकते हैं कि उसमें सुधार हो। सबसे बढ़कर, हमें उसके उद्धार के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

### “विश्राम और चैन के साथ जीवन” (2:2)

यह क्यों महत्वपूर्ण है कि हम “विश्राम और चैन के साथ जीवन” व्यतीत करें? कुछ का प्रत्युत्तर हो सकता है, “कैसा विचित्र प्रश्न है! अवश्य ही सभी विश्राम और चैन के साथ जीवन व्यतीत करना चाहते हैं!” संभवतः पौलुस के मन में, जीवन का आनन्द लेने के अवसर से बढ़कर, कुछ और गंभीर बात थी। इसके तुरंत बाद की आयतें इस बात पर केंद्रित हैं कि परमेश्वर चाहता है कि सभी उद्धार पाएँ (2:3, 4)। जब संसार में शान्ति है, तब हम अपने पड़ोसियों के साथ प्रभु के बारे में खुलकर बातें कर सकते हैं। जब संसार में शान्ति है, तब हम निर्भीक होकर सुसमाचार का प्रचार और यीशु मसीह के बारे में समाचार फैला सकते हैं।<sup>124</sup> इसलिए हम “विश्राम और चैन के साथ जीवन” के लिए प्रार्थना करें, न केवल अपने लिए परन्तु इस संसार के लिए भी।

### परमेश्वर के सत्य को जानना (2:4)

पौलुस ने उद्धार और सत्य के ज्ञान को एक साथ बाँध दिया। जब हम सत्य के ज्ञान में आते हैं, तो विश्वास उत्पन्न होता है (रोमियों 10:17), जिससे फिर आज्ञाकारिता उत्पन्न होती है (रोमियों 16:26)। परन्तु यह, वह “सत्य को भली भाँति पहचान” नहीं है जिसकी सब को आवश्यकता है। यीशु ने कहा कि, जब हम किसी को शिक्षा तथा बपतिस्मा दे चुकें, तो उसके बाद हमें उसे शिक्षा देते रहना चाहिए (मत्ती 28:19, 20)। हम में से प्रत्येक को “परमेश्वर की इच्छा की पहचान में परिपूर्ण” होना चाहिए (कुलु. 1:9)।

### यीशु: परमेश्वर और मनुष्य (2:5)

एक मनुष्य के बारे में कहानी सुनाई जाती है कि उसने एक लकड़ी का टुकड़ा और एक लोहे का टुकड़ा लिया और उसे एक वेल्डर के पास ले जाकर उन्हें वेल्ड करके एक बना देने के लिए कहा। उस कार्य करने वाले ने कहा, “यह असंभव है, कि लकड़ी और लोहे के टुकड़ों को एक साथ वेल्ड कर दिया जाए, इसके लिए मुझे एक ऐसी वस्तु चाहिए होगी जो एक ही समय पर लकड़ी भी हो और लोहा

भी।” यह काल्पनिक कहानी मानवजाति के परमेश्वर के साथ एक हो जाने की चुनौती को चित्रित करती है। इस एकता को लाने के लिए एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी, जो एक ही समय पर, दोनों परमेश्वर और मनुष्य हो। ऐसा अद्वितीय व्यक्ति यीशु था: वह पूर्णतः परमेश्वर और पूर्णतः मनुष्य। यह सत्य हमारे सीमित मस्तिष्कों के लिए बहुत पवित्र और ऊँचा है, परन्तु हम इसे विश्वास के द्वारा ग्रहण कर सकते हैं।

### हमारा “एक ही बिचवई” (2:5)

पवित्रशास्त्र “एक ही बिचवई” की बात करता है। ज्ञानवादियों ने स्वर्गदूतों को बिचवई के रूप में जोड़ दिया (देखें कुलु. 2:18); आज कुछ ने मरियम और विभिन्न “संतों” को भी जोड़ दिया है; परन्तु परमेश्वर केवल एक को मानता है। यीशु परमेश्वर तक पहुँचने के लिए “एकमात्र मार्ग” है (यूहन्ना 14:6; बल दिया गया है)। हम “उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं” (इब्रा. 7:25)। पिता तक हमारी पहुँच “उस ही के द्वारा” (इफि. 2:18) होती है।

### पौलुस की शिक्षा का कारण क्या है? (2:8-15)

पौलुस का ऐसा मानना क्यों था कि उसे 2:8-15 के प्रबल शब्द लिखने पड़े? इन आयतों के अध्ययन में, हमने सुझाव दिया था कि वस्त्रों से संबंधित उसके शब्द यह संकेत कर सकते हैं कि धनी मसीही स्त्रियाँ आराधना सभा को अपने सजावटी वस्त्रों की प्रदर्शनी के लिए प्रयोग कर रही थीं। पौलुस द्वारा स्त्रियों को आराधना में अगुवाई करने के संबंध में, हमने इफिसुस के पूजा पद्धति की शैली में स्त्रियों के प्रबल भागों का उल्लेख किया था, जिसके कारण मंडलियों में कुछ स्त्रियाँ प्रभावित हुई होंगी। हमने इस पर भी ध्यान किया था कि कैसे कुछ वर्तमान लेखकों ने गलतियों 3:28 (“न कोई नर, न नारी”) की भाषा का गलत अर्थ निकाला और दुरुपयोग किया है; यह भी संभव है कि इफिसुस की स्त्रियों ने इस शिक्षा को और बिगाड़ दिया था।

स्पष्ट बात यह है कि हम नहीं जानते कि पौलुस के कथन किस के उकसाने (पवित्र आत्मा के अतिरिक्त) से आए, परन्तु इसका अनुमान लगाने में कि पौलुस ने जैसा लिखा वैसा क्यों लिखा, कोई वास्तविक हानि नहीं है। परन्तु अनुमान लगाने का यह अभ्यास बहुत गलत हो जाता है जब एक लेखक इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि “जैसे ही उस परिस्थिति [जो भी परिस्थिति लेखक ने कल्पना की] का निवारण हुआ, पौलुस के शब्द हटा लिए गए और स्त्री के लिए प्रचार करना और आराधना में पुरुषों पर अधिकार रखना ठीक हो गया।” हम थोड़ा रुक कर इसके बारे में विचार करें। नए नियम के प्रेरणा पाए लेखों में से, यदि लगभग सभी नहीं, तो अधिकांश, विशिष्ट नकारात्मक परिस्थितियों के प्रत्युत्तर में थे। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि जब परिस्थिति ठीक हो गई, तो वे शिक्षाएँ रद्द और निरर्थक हो गईं।

## स्त्रियों के बारे में पौलुस की शिक्षाएँ (2:11-14)

पौलुस स्त्रियों से बैर रखने वाला नहीं था, जैसा कुछ उसे मानते हैं। उसने फीबे की, जो कलीसिया की एक सेविका थी, सराहना की (रोमियों 16:1)। उसने प्रिस्किल्ला को मसीह यीशु में सहकर्मि कहा (रोमियों 16:3)। उसने यूओदिया और सुन्तुखे को उसके साथ सुसमाचार के लिए परिश्रम करने वाली कहा (फिलि. 4:1-3)। रोमियों की पत्नी के अन्त में जिन लोगों का उसने अभिनन्दन किया उनकी सूची पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि उनमें से बहुतेरी स्त्रियाँ थीं (रोमियों 16:3-15)। हम यह न भूलें कि वह पौलुस ही था जिसने ये भावनाएँ जगाने वाले शब्द लिखे थे: “न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो” (गला. 3:28)।

## बाइबल के अनुसार समर्पण (2:11)

जब बाइबल समर्पण की बात करती है तो वह कीमत, योग्यता, या वर्चस्व के विषय कोई निहितार्थ प्रदान नहीं करती है। ध्यान का केन्द्र क्रम और अधिकार पर है। जब राजमार्ग पर एक पुलिसवाला किसी कार को रोकता है, उसे कार चालाक पर अधिकार होता है (देखें रोमियों 13:1-7)। हो सकता है कि उस चालाक में ऐसे गुण हों जो उस पुलिसवाले में नहीं हैं; वह अधिक बुद्धिमान या अधिक पढा-लिखा हो सकता है। परन्तु फिर भी, उस परिस्थिति में, अधिकार पुलिसवाले के पास होता है।

कुछ लेखक मसीहियत को लेकर अधिकार और समर्पण की सारी धारणाएँ बरखास्त कर देते हैं। उनके प्रमाण का लेख है गलतियों 3:28: “अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।” उनको इस बात की कोई चिन्ता नहीं होती है कि जिस प्रेरित ने यह लिखा, उसी ने यह भी लिखा कि पत्नियों को अपने पतियों के आधीन रहना चाहिए (इफि. 5:24), और स्त्रियों को सार्वजनिक आराधना में समर्पित रहना है (1 कुरि. 14:34; 1 तीमु. 2:11, 12)। यह सच है कि मसीह में “न कोई यहूदी रहा और न यूनानी” “न कोई दास, न स्वतंत्र” “न कोई नर, न नारी।” हम इसमें जोड़ सकते हैं कि मसीह में न कोई काला है न गोरा, लंबा न छोटा, पढा-लिखा न अनपढ - क्योंकि मसीह में सभी एक हैं। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि जो मसीही हो जाते हैं वे वैसे नहीं रहते हैं जो वे हैं, और परमेश्वर के दिए हुए निर्देशों के आधीन नहीं रहते हैं।<sup>125</sup> खण्ड जिस बात को प्रकट करता है वह है कि महत्व में कोई भिन्नता नहीं है; परमेश्वर की दृष्टि में एक मसीही की भी उतनी ही कीमत है जितनी किसी दूसरे की। इसके अतिरिक्त, “जब बात प्रभु में उद्धार की आती है, तो नर या नारी, दास या स्वतंत्र, में कोई भिन्नता नहीं है, क्योंकि मसीह में सब एक हैं।”<sup>126</sup>

पौलुस ने लिखा, “परन्तु मैं चाहता हूँ, कि तुम यह जान लो, कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है: और स्त्री का सिर पुरुष है, और मसीह का सिर परमेश्वर

है” (1 कुरिन्थियों 11:3)। जे. डी. थॉमस ने लिखा, “मसीह . . . परमेश्वर से कम नहीं है, यद्यपि कार्यकारिता में उसके अधीन है।”<sup>127</sup> परमेश्वर और मसीह का एक होना उस “कार्यकारिता की अधीनता” से प्रभावित नहीं होता है - और न ही पुरुष और स्त्री की एकता प्रभावित होती है।

### बच्चे जनना (2:15)

हमने 2:15 के टिप्पणियों में सुझाया था कि पौलुस ने बच्चों को जनने का उल्लेख इसलिए किया था क्योंकि यह स्त्रीजाति का एक अद्वितीय गुण है। कुछ का सोचना है कि विशेष रीति से बच्चे जनना कहने के पीछे पौलुस का एक और भी उद्देश्य था। केली ने लिखा,

यह भी संभव है कि स्त्रियों के लिए बच्चे जनने पर इतना जोर देने के द्वारा, पौलुस उन झूठे शिक्षकों पर एक लठ्ठ तान रहा था जो यौन संबंधों के विषय अपमानित करने वाले विचार रखते थे [1 तीमु. 4:3], और बाद में जिनके ज्ञानवादी वंशजों ने, आईरिन्यस के अनुसार . . . यह घोषित किया कि “विवाह और बच्चे जनना शैतान की ओर से है”।<sup>128</sup>

पौलुस ने विवाह और बच्चे जनने को प्रोत्साहित किया (तीतुस 2:4)।

### अध्याय 2 और 1 कुरिन्थियों 11:5 के मध्य क्या संबंध है?

ऐसे बहुतेरे, जो यह विश्वास करते हैं कि अध्याय 2 में पौलुस की शिक्षाएँ सारे संसार की कलीसियाओं के लिए नहीं थीं, अपनी बात प्रमाणित करने के लिए वे एक खण्ड का प्रयोग करते हैं, कि भिन्न परिस्थितियों में, पौलुस ने स्त्रियों को शिक्षा देने की अनुमति दी है। वे 1 कुरिन्थियों 11:5 का प्रयोग करते हैं, जो उन स्त्रियों के विषय है जिन्हें भविष्यवाणी का वरदान मिला था। यह ध्यान देने की बात है कि भविष्यवाणी करने में निहित है कि उनके लिए श्रोता भी होंगे, कि पदों के विषय पौलुस के निर्देश संकेत करते हैं कि कोई सार्वजनिक परिस्थिति रही होगी, और पौलुस का अगला विषय प्रभु भोज है (1 कुरि. 11:17-34), जो कलीसिया की आराधना सभा का हृदय है (प्रेरितों 20:7)। इनमें से तीसरा महत्वहीन हो सकता है क्योंकि 1 कुरिन्थियों 11:17 में विषय परिवर्तन का संकेत मिलता है। परन्तु यह भी सत्य है कि 1 कुरिन्थियों 11:5 की परिस्थिति कुछ सीमा तक सार्वजनिक है। हमें इस आयत की व्याख्या “[1 कुरिन्थियों] 14:34”<sup>129</sup>: “स्त्रियाँ कलीसिया की सभा [‘मण्डलियों’] में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं” के निषेधों के अन्तर्गत” करनी चाहिए।<sup>129</sup> पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 11 के पहले भाग में एक समस्या को संबोधित किया: मसीही स्त्रियों को सार्वजनिक परिस्थितियों में अधीनता किस प्रकार दिखानी चाहिए। उसने 1 कुरिन्थियों 14 में एक अन्य को संबोधित किया: मसीही स्त्रियों को अधीनता मण्डली में कैसे दिखानी चाहिए। डब्ल्यू. ई. वाइन ने लिखा,

यह विचार कि [1 कुरि. 11:5 में] मंडलियों के एकत्रित होने के अवसरों का

दृष्टिकोण है, 14:34 की इस आज्ञा द्वारा बाहर हो जाता है कि कलीसिया के एकत्र होने के समय स्त्रियों को चुप रहना है . . . । इस कथन के शब्दों को चाहे जैसे भी समझा जाए, ऐसा कोई स्पष्टीकरण स्वीकार्य नहीं है जो इस मूल सिद्धान्त का खण्डन करता है कि “एक स्पष्ट पवित्रशास्त्र किसी अन्य सरलता से नहीं समझे जाने वाले के लिए अलग नहीं हटाया जा सकता है”। [1 कुरि.] 14:34 के अर्थ को समझने में कोई गलती नहीं हो सकती है। इसलिए यह कथन [1 कुरि. 11:5] मण्डली के एकत्रित होने के विषय में नहीं है।<sup>130</sup>

## समाप्ति नोट्स

<sup>1</sup>डब्ल्यु. ई. वाइन, मेरिल एफ. अनगर और विलियम व्हाइट, जूनियर, *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजीटरी डिक्शनरी आफ ओल्ड एण्ड न्यू टेस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 62. <sup>2</sup>वाल्टर बाऊर, *ए ग्रीक-इंगलिश लेक्सीकन आफ द न्यू टेस्टामेंट एण्ड अल्टी लिटरेचर*, तीसरा संस्करण, संशोधित और सम्पादक फ्रेडरिक विलियम डैकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी आफ शिकागो प्रेस, 2000), 213. <sup>3</sup>2:1 के दृष्टिकोण से, *प्रोसुखे* में प्रार्थना का वह हर एक पहलू सम्मिलित है जो अन्य तीन शब्दों में सम्मिलित नहीं किया गया है, जैसे कि हमारे पापों का अंगीकार। <sup>4</sup>बाऊर, 878. <sup>5</sup>पूर्वोक्त, 339-40. दूसरे संदर्भ में सामान्यता *एन्टूक्सिस* का अर्थ “प्रार्थना” है (4:5); लेकिन 2:1 में यह विशेष प्रार्थना के लिए प्रयोग किया गया है। शब्दों प्रेरितों। 19:23-41. <sup>7</sup>बाऊर, 81. <sup>8</sup>पूर्वोक्त, 79. <sup>9</sup>“सब ऊँचे पद वालों” वाक्यांश हमें सब अधिकारियों के लिए सोचने के लिए विवश करता है, जिसमें विद्यालय के शिक्षकगण एवं अन्य अधिकारी भी हो सकते हैं; परंतु संभवतः यहाँ पौलुस के मन में अधिकारी ही हो सकते थे। <sup>10</sup>बाऊर, 439.

<sup>11</sup>पूर्वोक्त, 440-41. <sup>12</sup>डॉन डीवेल्ट, *पॉल्स लेटर्स टू तीमोथी एण्ड टाइटस*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक (जॉप्लीन, मिसूरी: कॉलेज प्रेस, 1961), 49. <sup>13</sup>वाईन, अनगर, और व्हाइट, 272. <sup>14</sup>बाऊर, 412. <sup>15</sup>वाल्टर डब्ल्यु. वेसेल और जॉर्ज डब्ल्यु. नाइट III, नोट्स आन 1 एण्ड 2 तीमोथी, *द NIV स्टडी बाइबल*, संपादक केन्नेथ बार्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगन: जॉर्डरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1985), 1837. <sup>16</sup>बाऊर, 919. <sup>17</sup>“अच्छे” की टिप्पणी के लिए 1:8 की टिप्पणी देखें। <sup>18</sup>बाऊर, 109. <sup>19</sup>“परमेश्वर हमारा उद्धारकर्ता” पुराने नियम की एक सामान्य अवधारणा है, लेकिन नये नियम में यह कभी-कभी पाया जाता है। विशिष्ट वाक्यांश “परमेश्वर हमारा उद्धारकर्ता” केवल 1 तीमुथियुस और तीतुस में ही पाया जाता है (1 तीतु. 1:1; 2:3; तीतुस 1:3; 2:10; 3:4)। <sup>20</sup>बाऊर, 982-83.

<sup>21</sup>पूर्वोक्त, 447. <sup>22</sup>वाईन, अनगर, व्हाइट, 348. <sup>23</sup>संभवतः, विरोधाभास दृष्टिकोण होता है: झूठे उपदेशक कुछ चुने हुए मनुष्यों को ही “विशेष ज्ञान” बताते थे। <sup>24</sup>“एक परमेश्वर” के बारे में वक्तव्य कालांतर में अभ्युदय रहस्यवाद की विचारधारा का विरोधाभास है जो दो ईश्वर पर विश्वास करता है: जैसे पुराने नियम में निम्न ईश्वर और नये नियम में श्रेष्ठ ईश्वर। <sup>25</sup>विलियम बारक्ले, *द लेटर्स टू तीमोथी, टाइटस, एण्ड फाइलेमोन*, संशोधित संस्करण, द डेली स्टडी बाइबल (फिलाडेलफिया: वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1975), 62. <sup>26</sup>वाईन, अनगर, और व्हाइट, 400; विलियम हेन्ड्रिक्सन, *एक्सपोजीशन आफ द पास्टोरल कमेंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगन: बेकर बुक हाऊस, 1965), 97. <sup>27</sup>बाऊर, 634. <sup>28</sup>गॉर्डन डी. फी, *1 और 2 तीमोथी*, टाइटस, ए गुड न्यूज कमेंट्री (सैन फ्रांसिस्को: हार्पर एण्ड रो, 1984), 29. <sup>29</sup>डेविड लिप्सकॉम्ब और जे. डब्ल्यु. शेफर्ड, *ए कमेंट्री आन द न्यू टेस्टामेंट इपिस्टल्स*, खण्ड 5 (नैशविल: गॉस्पल एडवोकेट कम्पनी, 1942), 140. कुछ लोग यह नहीं मानते हैं कि पाठ यह नहीं सिखाता है कि यीशु अभी भी एक मनुष्य है। फिर भी, सभी इस बात से सहमत हैं कि मनुष्य के रूप में यीशु के अनुभव ने उसे अद्वितीय रूप से

बिचवई करने के कार्य के लिए तैयार किया। <sup>30</sup>लूट्रान का द्योतक “छुड़ाने का साधन” है (λύω, “खोलना/छुड़ाना” से उद्धृत)।

<sup>31</sup>बाऊर, 87. <sup>32</sup>पूर्वोक्त, 1030. <sup>33</sup>छुड़ौती की आवश्यकता का विश्लेषण डेविड एल. रॉपर, *रोमियों 1-7: ए डॉक्ट्रीनल स्टडी*, दूथ फॉर टूडे कमेंट्री (सीसी, आरकांसस: रिसॉर्स पब्लिकेशन्स, 2013), 226-35, 251-53. <sup>34</sup>एक दृष्टिकोण से देखा जाए तो मसीह सबके लिए मरा (1 पतरस 3:18)। यदि दूसरे दृष्टिकोण से देखा जाए तो मसीह उनके लिए मरा जो उसके बलिदान को स्वीकार करते हैं (इफि. 5:25), क्योंकि ये ही हैं जो उसके मृत्यु से लाभान्वित होंगे। <sup>35</sup>“गवाही” (μαρτύριον, *मारटुरियोन*) शब्द की विश्लेषण के लिए 2 तीमु. 1:8 की टिप्पणी देखें। <sup>36</sup>वाक्यांश “ठीक समय पर” के संबंध में तीतुस 1:3 पर टिप्पणियाँ देखिए। <sup>37</sup>बाऊर, 1003-4. <sup>38</sup>उपरोक्त, 543. <sup>39</sup>कुछ प्रकार से घोषणा करने वाले का कार्य और दायित्व, राजदूत के समान होते थे (देखिए इफि. 6:20)। <sup>40</sup>अपोस्तोलौस शब्द के विषय, 1:1 पर टिप्पणियाँ देखें।

<sup>41</sup>बाऊर, 276. <sup>42</sup>“इसलिए” 2:7 के संदर्भ में हो सकता है - पौलुस के प्रचारक, प्रेरित, और उपदेशक होने की नियुक्ति के विषय। परमेश्वर द्वारा घोषणा करने वाला नियुक्त होने के कारण, पौलुस एक आज्ञा की घोषणा करने वाला था। <sup>43</sup>बाऊर, 182. <sup>44</sup>जे. एन. डी. केली, *द पास्टोरल एपिसिल्य*, हार्पर्स न्यू टेस्टामेंट कॉमेंट्रीस (सैन फ्रांसिस्को: हार्पर & रो, 1960), 65. <sup>45</sup>बाऊर, 79. <sup>46</sup>वाॉल्टर एल. लेईफेल्ड, *1 & 2 टिमोथी, टाईटस*, द NIV एप्लिकेशन कॉमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जॉनडरवैन, 1999), 92. <sup>47</sup>जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स, *लेटर्स टू टिमोथी*, द लिविंग वर्ड (ऑस्टिन, टेक्सस: आर. बी. स्वीट को., 1964), 21. <sup>48</sup>हेन्ड्रिक्सन, 105. क्या पौलुस कह रहा था कि स्त्रियों को सार्वजनिक आराधना सभा में प्रार्थना नहीं करनी चाहिए? नहीं, परन्तु वह चाहता था कि वे हन्ना के समान रहें, जिसने अपने मन ही में कहा (1 शमूएल 1:13)। <sup>49</sup>केली, 66. <sup>50</sup>कार्ल स्पेन, *द लेटर्स ऑफ पौल टू टिमोथी एण्ड टाईटस*, द लिविंग वर्ड कॉमेंट्री (ऑस्टिन, टेक्सस: आर. बी. एण्ड को., 1970), 46.

<sup>51</sup>एक अपवाद है जब कोई लापरवाह रवैये के साथ “प्रार्थना” कर रहा हो जो उसके शरीर के हाव-भाव से प्रतिबिंबित होता हो। <sup>52</sup>कुछ लेखक रोमियों 16:16 के साथ समानान्तर देखते हैं। उस आयत के पहले भाग में बल चुम्बन पर नहीं है, जो कि अभिनन्दन का एक सामान्य तरीका था, परन्तु उस चुम्बन की “पवित्रता” पर; उसे वास्तविक होना था पाखण्डी नहीं। <sup>53</sup>पौल लेस्ली गार्बर, “हैंड,” *द इंटरनेशनल स्टैंडर्ड वाइबल एन्साइक्लोपीडिया*, रि. एड., ed. ज्यूप्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: वम. बी. ईईमैस पब्लिशिंग को., 1982), 2:610. <sup>54</sup>बाऊर, 728. <sup>55</sup>प्रार्थना करने वाला कभी सिद्ध नहीं हो सकता है, क्योंकि हम सभी पाप करते हैं (1 यूहन्ना 1:8, 10); परन्तु उसमें परमेश्वर को प्रसन्न करने की दृढ़ लालसा होनी चाहिए। इसमें जब भी उससे पाप हो जाए तब पश्चाताप के साथ उसकी ओर मुड़ना सम्मिलित है (1 यूहन्ना 1:9)। <sup>56</sup>बाऊर, 720. <sup>57</sup>वाइन, अनगर, एण्ड व्हाईट, 26. <sup>58</sup>बाऊर, 232-33. <sup>59</sup>जॉन आर. डब्ल्यू. स्टौट, *गार्ड द दूथ: द मेसेज ऑफ 1 टिमोथी & टाईटस*, द वाइबल स्पीक्स टूडे (डाउनर्स ग्रोव, इल्लेनोए: इन्टरवर्सिटी प्रैस, 1996), 74. <sup>60</sup>वर्तमान में महिलाएँ सँसार की जनसंख्या का 49.6 हैं (दिसंबर 5, 2016 को देखा गया, <http://data.worldbank.org/indicator/SP.POP.TOTL.FE.ZS>)।

<sup>61</sup>व्याख्या के महत्वपूर्ण वाद-विवाद का एकमात्र केन्द्र-बिंदु है आयत 15 में प्रयुक्त रहस्यमय भाषा। <sup>62</sup>ल्यूक टिमोथी जॉनसन, *1 टिमोथी, 2 टिमोथी, टाईटस*, नौक्स प्रीचिंग गार्डिंस (एटलांटा: जॉन नौक्स प्रैस, 1987), 62. <sup>63</sup>वे ही लेखक यह भी नहीं मानते हैं कि 1 तीमुथियुस 3 और उससे संबंधित खण्ड हमें आज कलीसिया की अगुवाई के लिए परमेश्वर द्वारा स्थापित नमूना प्रदान करते हैं। <sup>64</sup>देखिए 1 कुरि. 1:2; 2 कुरि. 2:14; 1 थिस्स. 1:8. <sup>65</sup>लेइफेल्ड, 93. <sup>66</sup>“मैं चाहता हूँ” अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है। इसे 2:8 से लिया गया है। <sup>67</sup>बाऊर, 208-9. <sup>68</sup>इस यूनानी शब्द से “कॉस्मेटिक्स” आता है। <sup>69</sup>बाऊर, 560. <sup>70</sup>हेन्ड्रिक्सन, 105.

<sup>71</sup>अनेकों अनुवादों में, *कोसमियोस* का अनुवाद “संकोच” या “संकोच सहित” किया गया है (देखें KJV; NKJV; NIV)। <sup>72</sup>बाऊर, 25. <sup>73</sup>*द अमेरिकन हैरिटेज डिक्शनरी*, 5वां एड. (2012),

एस.वी. “कन्वेंशन।”<sup>74</sup>बाऊर, 987. <sup>75</sup>शब्द “मात्र” अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है क्योंकि संदर्भ से यह अर्थ स्पष्ट है।<sup>76</sup>हेन्ड्रिक्सन, 107. <sup>77</sup>प्लिनी *नैचुरल हिस्ट्री* 9.58. <sup>78</sup>हम जहाँ भी हों हमें वहाँ के लिए उचित वस्त्र पहिनने के बारे में चिन्तित होना चाहिए, परन्तु इस लेख में बल आराधना के लिए उपयुक्त वस्त्रों पर है।<sup>79</sup>बाऊर, 861. <sup>80</sup>उपरोक्त, 356; वाइन, अनगर, और व्हाईट, 490-91.

<sup>81</sup>बाऊर, 452. <sup>82</sup>और बातें जोड़ी जा सकती हैं, जैसे कि उनके शब्द (देखें 5:13)। <sup>83</sup>1 कुरिन्थियों 14 में, क्लीसिया (ἐκκλησία, *एक्क्लीसिया*) के लिए शब्द का संदर्भ “मसीही . . . मण्डली” से होता है (बाऊर, 303)। उस अध्याय के आयत 23 और 26 में शब्द “इकट्टी” और “इकट्टे” आया है।<sup>84</sup>बाऊर, 384-85. <sup>85</sup>आर्चीबाल्ड थोमस रौबर्टसन, *वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टेस्टामेंट*, वोल. 4, *द एपिसल्स ऑफ पौल* (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1931), 570. <sup>86</sup>वाइन, अनगर, और व्हाईट, 619; बाऊर, 241. <sup>87</sup>पहले प्रिस्किल्ला का नाम दिया गया है, जिससे कुछ विश्वास करते हैं कि ये निर्देश देने में उसने पहल की।<sup>88</sup>भविष्यवाणी, नए नियम का, एक आश्चर्यकर्म वाला वरदान था (1 कुरि. 12:10), जो प्रेरितों के हाथ रखने के द्वारा था (प्रेरितों 8:18)।<sup>89</sup>रेमण्ड सी. केलसी, *फर्स्ट कोरिन्थियंस*, द लिविंग वर्ड (ऑस्टिन, टेक्सस: आर. बी. स्वीट को., 1967), 50. <sup>90</sup>प्रचार के विषय पौलस के निर्देशों में पवित्रशास्त्र का सार्वजनिक स्थान में पढ़ा जाना सम्मिलित है (4:13)।

<sup>91</sup>पिछले समयों में कुछ ने आयत 12 में KJV के वाक्यांश “अधिकार छीनना” को पकड़ कर यह कहा कि यदि कोई पुरुष किसी स्त्री से *कहे* कि वह सभा में सिखाए, तो यह उसके अधिकार को “छीनना” नहीं होता। यूनानी लेख मात्र यह कहता है कि “अधिकार रखे” या “अधिकार को प्रयोग करे”; अधिकार के “छीनने” का कोई संकेत या सुझाव नहीं है। किसी पुरुष को वह अनुमति देने का अधिकार नहीं है जिसे पौलस ने प्रेरणा के द्वारा निषेध किया है।<sup>92</sup>बाऊर, 150. <sup>93</sup>उपरोक्त, 1041. <sup>94</sup>वाइन, अनगर, एण्ड व्हाईट, 606. <sup>95</sup>बाऊर, 1041. <sup>96</sup>वॉरेन डब्ल्यू. रिस्वी, *द बाइबल एक्सपोजिशन कॉमेंट्री: न्यू टेस्टामेंट*, वोल 2 (व्हीटन, इल्लेनोए: विक्टर बुक्स, 1989), 217. <sup>97</sup>अन्य खण्डों से, हम जानते हैं कि स्त्रियों को आराधना में अन्य कार्य करने हैं, जैसे कि गाना (इफि. 5:19) और प्रभु भोज में सम्मिलित होना (1 कुरि. 11:23-34); परन्तु यहाँ पौलस के निर्देश आराधना सभा के सिखाने/प्रचार करने के भाग से संबंधित हैं।<sup>98</sup>कुछ अनुवाद वाक्य का आरंभ “होने दें” से करते हैं जिससे यह भ्रम उत्पन्न हो सकता है कि ऐसा करना वैकल्पिक है।<sup>99</sup>बाऊर, 440. 2:2 में “चुपचाप” (*हेसुकिया*) शब्द “चुप” (ἡσυχίος, *हेसुकियोस*) से संबंधित है।<sup>100</sup>उपरोक्त, 615.

<sup>101</sup>बहुत से व्याख्याकर्ताओं ने ध्यान किया है कि यह मसीहियत की एक आशीष है। यहूदी, स्त्रियों को तोरह सीखने नहीं देते थे, परन्तु मसीहियत दो नो, स्त्री और पुरुषों, को परमेश्वर का वचन सीखने के बराबर अवसर देती है।<sup>102</sup>ब्रूस मॉर्टन, *डिसीविंग विंड्स* (नैशविल्ले: 21स्ट सेंच्युरी क्रिश्चियन, 2009), 199. <sup>103</sup>यह ध्यान देने योग्य बात है कि पौलस ने इन घटनाओं को ऐतिहासिक माना है।<sup>104</sup>हमारे दृष्टिकोण से, आदम और भी अधिक दोषी था क्योंकि उसने सम्पूर्णतः यह जानते हुए कि वह परमेश्वर की अनाज्ञाकारिता कर रहा है, पाप किया।<sup>105</sup>बीते समय में कुछ व्याख्याकर्ताओं द्वारा निकाला गया एक निष्कर्ष था कि इस कहानी से यह प्रमाणित हो जाता है कि स्त्रियाँ बहकाए जाने के लिए पुरुषों से अधिक भोली होती हैं इसलिए अगुवे की भूमिका निभाने के लिए अयोग्य होती हैं।<sup>106</sup>इसका एक अपवाद हैं वे लेखक जिन्होंने यह सुझाव दिया है कि पौलस यह कह रहा था कि स्त्रियाँ बस बच्चे जनने के लिए ही ठीक हैं।<sup>107</sup>बाऊर, 982-83. <sup>108</sup>“बच्चे जनने” (τεκνογονία, *टेक्रोगोनियास*) के लिए यूनानी शब्द संबंधकारक हाल में है।<sup>109</sup>डी. एफ. हडसन, *टीच योरसेल्फ न्यू टेस्टामेंट ग्रीक* (लंडन: इंगलिश यूनिवर्सिटीज़ प्रैस, 1960), 106; यह “द्वारा, में होकर, माध्यम से” कहने के समान है (बाऊर, 224)।<sup>110</sup>हडसन, 106; बाऊर, 223.



111डेव मिल्लर, “द रोल ऑफ विमेन इन द चर्च,” *स्पिरिच्युल स्वोर्ड* 24 संख्या. 1 (अक्टूबर 1992): 23. 112एवोन मेलोन, “एन एक्सीजेटिकल एण्ड डिवोश्ल कॉमेन्ट्री: 1 टिमोथी 2:11-15,” *द प्रीचर्स पीरियॉडिकल* 3 (मार्च 1983): 32. मेलोन ने अपनी बात को चित्रित करने के लिए यह ध्यान दिलाया कि आज्ञा “वचन का प्रचार कर” (2 तीमु. 4:2) को प्रचारक की भूमिका का कुल योग माना जा सकता है, इस तथ्य के होते हुए भी कि प्रचारक उससे भी कहीं अधिक करता है। 113शब्द “बने रहो” एक यूनानी बहुवचन क्रिया (μείνωσιν, *मेंइनोसिन*) से है जो बहुवचन कर्ता (“वे”) की माँग करता है। 114बाऊर, 630-31. 115देखें 1 तीमु. 1:5. 116शब्द “अपवित्रों” (1 तीमु. 1:9) और “पवित्र” (1 तीमु. 2:8) भिन्न शब्द ὁσίος (*होसियोस*) से हैं। 117बाऊर, 9-10. 118वाइन, अनगर, एण्ड व्हाईट, 307. 119बाऊर, 987. 120वेन ई. शौ, *पास्टोरल एपिसिल्स* से लिया गया, सौलिड फाउन्डेशन सरमन स्टार्टर्स (सिन्सिनेटी: स्टैंडर्ड पबलिशिंग को., 1999), 19-20.

121मसीही विश्वासी और वैधानिक सरकार के संबंध में अन्य महत्वपूर्ण खण्ड हैं रोमियों 13:1-7 और 1 पतरस 2:13-17. 122स्टौट, 62. 123इस परिच्छेद में “वह/उसे/उसका” सामान्य रूप में प्रयोग किए गए हैं। कुछ राष्ट्रों में स्त्री शासक होती हैं। 124नए नियम के समय में *पैक्स रोमाना* (रोमी शान्ति) ने यह संभव किया कि मसीही सेवक स्वतंत्रता से सारे सभ्य सँसार में मुक्त होकर विचरण कर सकें। 125उदाहरण के लिए, एक प्रथम शताब्दी का मसीही जो दास था वह दास बना रहता और अपने स्वामी के प्रति उसकी कुछ परमेश्वर द्वारा दिए गए दायित्व थे (इफिसियों 6:5-8; 1 तीमुथियुस 6:1, 2)। 126टी. आर. एप्पलबरी, *स्टडीस इन फर्स्ट कोरिन्थियंस*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक (जोपलिं, मो.: कॉलेज प्रैस, 1963), 205. 127जे. डी. थोमस, *फर्स्ट कोरिन्थियंस*, द वे ऑफ लाइफ (एबिलीन, टेक्सस: बिबलिकल रिसर्च प्रैस, 1984), 35. 128केली, 70. केली आईरिन्यस *अगेंस्ट हेरेसीस* 1.24.2 से उद्धृत कर रहे थे। 129केलसी, 50. 130डब्ल्यू. ई. वाइन, *1 कोरंथियांस* (लंडन: ओलिफंट्स, 1951), 147.